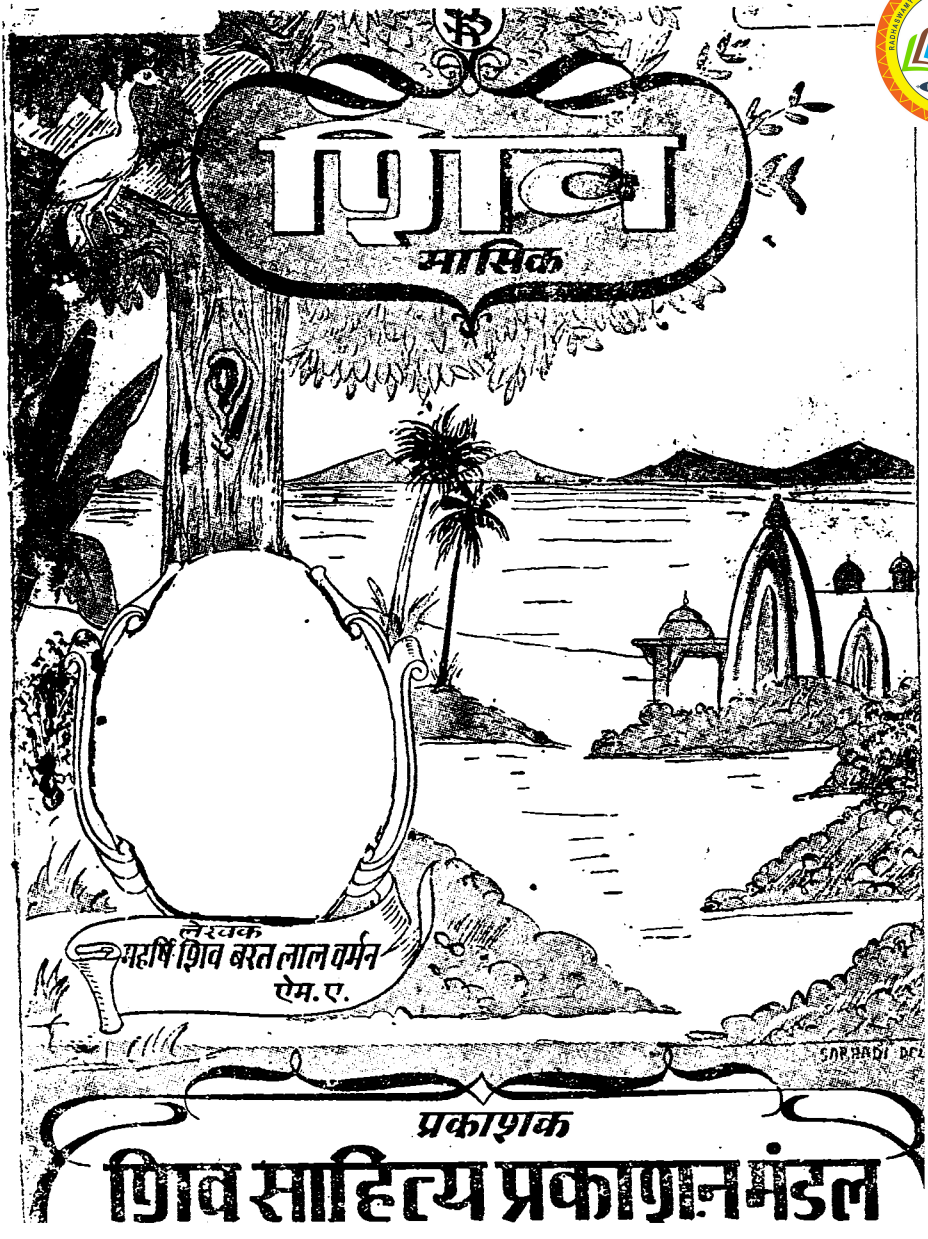
शिव
मासिक
लेखक
महर्षि शिव बरत लाल वर्मन
ऐम. ए.
प्रकाशक
शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

हमारा जीवन व्यवहार

जितने 'शिव' या 'मनुष्य बनो' पत्रिकाओं के ग्राहक हैं मैं समझता हूँ वह सब आध्यात्मिक या आत्मिक ज्ञान के जिज्ञासु हैं। उनको इन पत्रिकाओं से प्रेम है मगर इससे क्या हुआ ? केवल पढ़ लेने मात्र से काम नहीं निकल सकता। पुस्तकें तथा सत्संग मनुष्य को ज्ञान देते हैं, उधर की ओर रुचि उत्पन्न करते हैं मगर जब तक उनके अनुसार आचरण नहीं होता तब तब कोई विशेष लाभ नहीं होता। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि आदमी धीरे-धीरे अपने आचरण को अपने व्यवहार को ठीक करे। मन को वश में रखने का प्रयत्न करता रहे। मन एक दिन में ही काबू में नहीं आता। उसकी हर समय निरख-परख करनी पड़ती है। इसके लिये ही मनुष्य को सुमिरन, ध्यान और भजन बताया गया है 'शिव' और 'मनुष्य बनो' पत्रिकायें इसीलिये प्रकाशित की जा रही हैं कि आप अपने जीवन की गढ़त करें। मगर अफसोस है कि जो पत्रिकायें आपको मिलती हैं; उनके चन्दे को भी आप समय पर न दें। कुछ ग्राहकों ने बार-बार लिखने पर भी उसका चन्दा नहीं भेजा और वह रुपया मारा गया। इससे पत्र को तो हानि हुई ही मगर अफसोस यह हुआ कि धार्मिक मार्ग पर चलने वालों की जब यह दशा है तो उन्होंने अपने आचरण में क्या सुधार किया और क्या सद्आचरण किया। इसलिये आपका सबसे पहिला कर्त्तव्य यह है कि अपने व्यवहार को अपनी नीयत को ठीक करें। यदि आप चन्दा देने में असमर्थ हैं तो लिखें। आपको मुफ्त देने का प्रबन्ध करेंगे अन्यथा आप इन पत्रों का चन्दा तुरन्त भेजने की कृपा करें और इन पत्रों से लाभ उठायें।

—देवीचरन मीतल

कम हैसियत आदमियों पर कम जुर्माना किया गया। इनमें काली भेड़ें कम निकलीं ।

इसके बाद तीसरा उपाय सूझा। जो लोग मन्दिरों में कम जाते थे और केवल घरों में कथा वार्ता करते थे उनके लूटने की बारी आई। मोतीबाई का नाम संदेह वाले वर्ग के नेता की गिनती में प्रस्तुत हुआ। दीवान ने उसके घर अपने चपरासी भेजे और जगत गुरु के दरबार में हाजिर होने का आदेश सुनाया, क्योंकि उसके यहाँ लोग प्रतिदिन आया जाया करते थे। पहिले तो उसे जाने में सोच विचार था लेकिन जब उसने देखा कि अकेली है और कोई हिन्दू आकर साथ देने को तैयार नहीं है, वह उठी और तमतमाई हुई सूरत बनाकर जगत गुरु के सामने खड़ी हो गई। उसके लिये तीन सौ रुपया देने पर दर्शन की कैद नहीं लगाई गई थी क्योंकि विधवा थी।

जगत गुरु ने उससे पूछा—'माई तू कौन है ?''

मोतीबाई ने धीमे से उत्तर दिया—'मैं विधवा ब्राह्मणी हूँ।''

"यहां क्या काम करती है ?"

"बहता पानी, रमता जोगी ! तीर्थ स्थानों से घूमती फिरती आ गई। यहाँ कथा सुनाती हूँ।"

"तू स्त्री है। तुझे दीक्षा और शिक्षा का अधिकार किसने दिया है।"

मोतीबाई ने निर्भयता से उत्तर दिया—"यह ईश्वर का वरदान है जिसका अधिकार मुझे और सब समझदार स्त्रियों को प्राप्त है।"

'हिन्दू शास्त्र स्त्रियों को इस अधिकार से बंचित करते हैं।"

"यह बात बिल्कुल गलत और निराधार है।" आदमी ठठ के ठठ जमा थे। मोतीबाई की निर्भयता के साथ उत्तर सुनकर सब दंग रह गये। यदि कोई हिन्दू राजा भी होता तो उसे जगत गुरु के बचनों की निर्भयता के शब्दों में विरोध करने की जुर्रत न होती। एक

सन्नाटा छा गया। सब इन्तजार करने लगे कि देखें जगत गुरु इसका क्या उत्तर देते हैं। और श्राप की दशा में उस पर क्या आपत्ति आती है। मोतीबाई निडर खड़ी हुई थी।

जगत गुरु यदि समझदार होता तो समय देखकर अधिक प्रश्न न करता। लेकिन उसके रौब-दौब में फर्क आने का भ्रम था। उसने फिर कहा—"माई ! तूने कैसे कहा कि शास्त्रों की आज्ञा गलत और निराधार है ?"

"मैंने यह बात शास्त्रों के बारे में नहीं कही। जो लोग स्त्रियों को शिक्षा दीक्षा के अधिकार से बंचित समझते हैं वह झूँठे हैं।"

एक न शुद दो शुद ! अब मोतीबाई ने खुले शब्दों में जगत गुरु को झूँठा बना दिया। उसके शिष्यों को क्रोध आया। जगत गुरु ने उन्हें क्रोध प्रगट करने से रोका और फिर प्रश्नोत्तर शुरू हुये।

"माई ! इस बात का तेरे पास कोई प्रमाण है कि स्त्री पुरुषों को शिक्षा दीक्षा दे सकती है।"

"क्यों नहीं ! एक दो नहीं लाखों प्रमाण दे सकती हूँ।"

"फिर हमको भी सुना दे।"

"सुनिये और ध्यान से सुनिये:—

इतिहास की साक्षी से सिद्ध है कि लोप मुद्रा अगस्त ऋषि की पतिनी ने वेद मंत्रों में सबसे पहिले वेदान्त के रहस्य खोज किये थे अन्यथा किसी को उनका पता भी न रहता।

गार्गी ने जन साधारण के समूह में उपनिषदों के ऋषि याज्ञवल्क के दांत खट्टे कर दिये थे।

लक्ष्मी भारती ने आपके आचार्य शंकर स्वामी का जिस तरह मुकाबला किया, उसका ज्ञान आपको होना चाहिये।"

जगत गुरु—"यह तो उन देवियों की बुद्धि का प्रमाण है।"

"शिक्षा और दीक्षा के अधिकार की बाबत तो यह साक्षी उचित

मोतीबाई--"शिक्षा दीक्षा के पूंछ नहीं लगी होती। जो स्त्री वेदान्त शास्त्र की बनाने वाली है क्या वह विद्वान और शिक्षक नहीं कहलाती। जो स्त्री शास्त्रों के अर्थों पर प्रकाश डाल सकती है क्या वह छिपे छिपे लोगों को शिक्षा का लाभ नहीं पहुँचाती ! यह मंडन मिश्र की स्त्री की विद्वता ही थी जिसके हर दो नाम सरस्वती और भारती के सम्मान में शंकराचार्य ने दीक्षा और शिक्षा के लिये दो विशेष सबसे अधिक माने हुये मठ स्थापित किये थे। इससे प्रगट है कि वह दीक्षित और शिक्षित है। इसे भी जाने दीजिये। उत्तराखंड में दो देवियाँ सहजोबाई और दयाबाई हुई हैं जिन्होंने हजारों पुरुषों को अपना शिष्य बनाया। और महाराज ! स्वयं आपकी प्रथम गुरु तो आपकी माता ही है जिसने आपको रास्ते पर लगाया। मातृमान, पितृमान, आचार्यमान आपने सुना ही होगा।"

जगत गुरु—"माई ! तू जानकार है लेकिन बिधवा होने पर तूने सिर पर बाल क्यों रख छोड़े हैं ?"

मोतीबाई—"मेरी खुशी ! मैं आपसे स्वयं प्रश्न करने का हक रखती हूँ। आपने अपने सिर के बाल क्यों मुड़वाये ? आपने ऋषियों के धर्म के विरुद्ध काम किया। वह पूरे बाल रखते थे। आपको उनकी दृष्टि से प्रायश्चित होना चाहिये।" हद हो चुकी। नाजुक बदन स्त्री ने जगत गुरु की बनी बनाई इज्जत क्षण भर में मिट्टी में मिला दी।

जगत गुरु क्रोध में आकर थर-थर कांपने लगे। आज्ञा दी—"इस चुडैल को पकड़ कर जबरदस्ती इसका सिर मूंड दो।"

चेले आगे बढ़े। मोतीबाई पर संकट का समय आ गया, उसने आब देखा न ताब, जगत गुरु के पास उनका मोटा सोटा धरा हुआ था, लपक कर उठा लिया। 'अब जिसका जी चाहे आ जाय मर्दों के मुर्दों से लाश पाट दूँ, तब तो मेरा नाम मोतीबाई। बड़ा जगत गुरु बनकर आया है। डरपोक, मक्कार ! कौन शास्त्र स्त्रियों पर इस

तरह कमीना हमला करने की आज्ञा देता है । चेलों को क्या कहता है ! यदि मर्द है तो कमजोर स्त्री के सामने आजा । देखूं तुझमें कितनी मर्दानगी है !''

चेले सहम गये । जगत गुरु का रंग फक होगया । सबका नातका एक दम बंद हो गया और मोतीबाई उस समूह में भयंकर दुर्गा के रूप में दिखाई देने लगी । किसी को साहस नहीं हुआ कि उसके पास आये । आदमियों के समूह में खलबली मच गई । सम्भव था झगड़ा बढ़ जाता । इतने में वही हाकिम जिला शरफुद्दीन कई मुसलमान सिपाहियों को लिये हुये उस समूह में आ धमका । यहां क्यों इतना शोर हो रहा है ? सब दंग रह गये !

बारहवां अध्याय
दुबारा जांच और परिणाम

शर्फउद्दीन और उनके आदमियों के आते ही लोगों के मन में विशेष प्रकार के विचार लहराने लगे । सब की दृष्टि जगत गुरु और मोतीबाई की ओर से हटकर उस पर लग गई ।

क्रिस्टिया राव संयोग से वहां नहीं था । वह कभी बिना आवश्यकता के जगत गुरु के पास नहीं आता था । इसका सम्बन्ध दीवान से अधिक था । वह उसी के बहाने उसी के नाम से काम तो कर दिया करता था और आप अलग-थलग रहता था । आदमी दौड़े गये उसे बुला लाये । आते ही उसने मेज कुर्सी और बेंचों का प्रबन्ध कर दिया । जगत गुरु अपने डेरे में जाने लगे । हाकिम जिला ने रोक लिया । भीड़ भी हटने लगी । वह भी उसके आदेश से रुक गया ।

हाकिम कुर्सी पर बैठ गया । उसके अलहकार भी यथा स्थान बठ गये । हाकिम ने मोतीबाई के लिये एक कुर्सी रखवादी । वह संकेत पाकर बैठ गई । वैसे वह अब तक खड़ी रही थी । जगत गुरु अपने सिंहासन पर बैठे रहे ।

शर्फउद्दीन जगत गुरु से बोले—"मैं यहाँ सरकार आला की आज्ञा से आज विशेष मामलों की जांच के लिये नियत किया गया हूं । एक बार पहिले भी तीन दिन के लिये आया था । मुझे सूचना मिली कि रामपुर में गड़बड़ हो रही है । मैं सीधे बिना सूचना यहां दौड़ा हुआ आया । लड़ाई झगड़ा हो रहा था । कठोर शब्द लोगों के मुँह से निकल रहे थे । लगभग मारपीट की नौबत आ गई थी यद्यपि किसी ने किसी को चोट नहीं पहुँचाई । अब मैं नियमानुसार जांच पड़ताल करने आया हूँ । आप लोगों का कर्तव्य है कि इस जाँच पड़ताल में अपने-अपने बयान सच-सच लिखायें ।"

जगत गुरु—"आप जो पूछेंगे उसका उचित उत्तर दिया जायगा"

शर्फउद्दीन —"आप कौन हैं और आपका नाम क्या है ?"

जगत गुरु—"मैं मुरशिद कोनीन (जगत गुरु) हूँ, और यही मेरा नाम है । मैं लक्ष्मी नगर से आया हूँ, जहां मेरी गद्दी है ।"

शर्फउद्दीन—"आप हिन्दू हैं या मुसलमान ।"

जगत गुरु—"मैं हिन्दू हूँ ।"

शर्फउद्दीन—"मुरशिद कोनीन क्यों नाम रक्खा गया ? यह मुसलमानों का धार्मिक शब्द है ।"

जगत गुरु—"मुरशिद कोनीन बेशक मुसलमानी भाषा का शब्द है लेकिन उर्दू बादशाही समय की भाषा है इसलिये ऐसा नाम रक्खा गया । आजकल प्रायः हिन्दुओं में अरबी फारसी के नाम रक्खे जाते हैं जैसे बाजबहादुर, फालबहादुर, इकबाल बहादुर, महबूब नवाजजंग आदि आदि ।"

शर्फउद्दीन—"यह साधारण नाम ही नाम है या इससे कुछ और

भी अभिप्राय है ?"

जगत गुरु—"यह नाम गुण और पद के लिहाज से है। संस्कृत या तेलंगी भाषा में इसका अनुवाद जगतगुरु है। मैं हिन्दुओं का गुरु हूँ। इसलिये मेरी गद्दी के सब उत्तराधिकारी इसी नाम से पुकारे जाते हैं।"

शर्फउद्दीन—"लेकिन जगतगुरु का अर्थ मुरशिदे दुनियाँ हो सकता है। कोनीन का अर्थ दोनों लोक है। क्या आप दोनों लोक के गुरु हैं ?"

जगत गुरु—"जो इस लोक का गुरु है वही दूसरे लोक का भी गुरु होता है। यह विश्वास की बात है।"

शर्फउद्दीन—"आप केवल हिन्दुओं के गुरु हो या मुसलमान भी आपके शिष्य हैं ?"

जगत गुरु—"मेरे शिष्य सब के सब हिन्दू हैं। मुसलमान कोई नहीं है।"

शर्फउद्दीन—"क्या हिन्दुओं की कुल जातियाँ आपको गुरु मानती हैं ?"

जगत गुरु—"नहीं, केवल शैवी अर्थात् शैवी धर्म पर चलने वाले मुझे गुरु मानते हैं।"

शर्फउद्दीन "यहां आप कैसे पधारे ?"

जगत गुरु- "हिन्दुओं को मार्ग दर्शन के लिये।"

शर्फउद्दीन—"अभी आपने स्वीकार किया कि सम्पूर्ण हिन्दू आपको गुरु नहीं मानते। इसलिये आप पूर्णरूप से सबके गुरु नहीं हैं। यों कहिये कि आप केवल शैवों के गुरु है।"

जगत गुरु—"मैं शैवों का गुरु हूं।"

शर्फउद्दीन—"यह माई कौन है ?"

जगत गुरु—"इसको मैं पूरी तरह नहीं जानता।"

शर्फउद्दीन—"यह यहां क्यों आई ?"

जगत गुरु—"मुझे नहीं मालुम है।"

शर्फउद्दीन—"क्या आपने स्वयं इसे बुलाया है या आपके दर्शन के लिये स्वयं आई है।"

जगत गुरु—"बुलाई हुई आई है।"

शर्फउद्दीन—"वह क्यों बुलाई गई?"

जगत गुरु—"यह हिन्दू विधवा है। मैंने इसे बुलाया कि इसका सिर मुँडवाऊँ। यह रीति है।"

शर्फउद्दीन—"क्या यह शैवी धर्म पर चलने वाली है?"

जगत गुरु—"यह मुझे नहीं मालुम।"

शर्फउद्दीन—"न आप इसे जानते हैं न उससे और उसके धर्म से जानकारी है। फिर यह क्यों बुलवाई गई?"

जगत गुरु—"लोगों ने शिकायत की कि यह शास्त्रों के नियम विरुद्ध कथा वार्ता करती है। मैंने उसे रोकना चाहा।"

शर्फउद्दीन—"क्या धार्मिक रूप से और सिद्धान्त रूप से आपको अधिकार है कि प्रत्येक हिन्दू स्त्री को बिना जाने पूछे उसे धर्माचरण से रोकें और उसका सिर मुँडवा दिया करें।"

जगत गुरु—"मुझे यह ख्याल हुआ कि यह शैवी धर्म की होगी।"

शर्फउद्दीन—"क्या केवल ख्याल के कारण किसी पर जबरदस्ती करना शास्त्र की आज्ञा है?"

जगत गुरु से इसका उत्तर नहीं बन पाया। तब हाकिम जिला मोतीबाई से बोले—"तू क्यों क्रोधित हुई?"

मोतीबाई—"जगत गुरु ने मुझको गाली दी। चुड़ैल कहा। चेलों को आज्ञा दी कि जबरदस्ती पकड़कर सिर मूंडो। इसलिये मुझे क्रोध आया।"

शर्फउद्दीन—"क्या जगत गुरु में तुझे विश्वास है?"

मोतीबाई—"बिल्कुल नहीं।"

शर्फउद्दीन—"फिर क्यों इनके पास आई?"

मोतीबाई—"मैं कहीं जाती नहीं। इनके चपरासी गये। वह जबरदस्ती करने लगे। मैं अगर न आती तो मेरी बेआबरू करते। इसलिये विवश होकर आने में ही अपनी भलाई समझी।"

शर्फउद्दीन—"तेरा नाम क्या है और कहां की रहने वाली है ?"

मोतीबाई—"मेरा नाम मोतीबाई है। घर पूना में है। मैं विधवा साधुनी हूं। घूमते हुये यहां आई।"

शर्फउद्दीन—"तुझे और किसी तरह की शिकायत इनके या और किसी के विरुद्ध है ?"

मोतीबाई—"नहीं।"

शर्फउद्दीन ने मोतीबाई को कहा—"अब तू जा सकती है। तू पढ़ी लिखी मालुम होती है। यदि फिर तेरे साथ किसी प्रकार की रोकथाम हो तो तुरन्त पुलिस को सूचना देदें। मैं तेरी आबरू की रक्षा के लिये हिदायत करता जाऊँगा।"

मोतीबाई चली गई।

शर्फउद्दीन ने फिर दूसरों के बयान लिखे जिनमें से उस बूढ़े तेलंगी ब्राह्मण से उसे अधिक विवरण मालुम होने की आशा थी। लेकिन उसने 'हाँ' और 'नहीं' के सिवाय और कुछ नहीं कहा।

शर्फउद्दीन क्रिस्टिया राव के विरुद्ध राय चाहता था लेकिन इस मामले में इस बार भी उसे असफलता हुई। जगत गुरु के अत्याचारों, व सख्तियों की तमाम बातों की रिपोर्ट उसके यहां पहुँची। सन्देह था कि दुर्व्यवहार में वह भी शामिल हो मगर वह शामिल नहीं था। लोगों ने यहां तक कहा कि वह जगत गुरु से मिलने भी नहीं आया। इसका कारण यह था कि उसके साथियों ने सबको डाट रक्खा था।

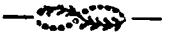

तेरहवाँ अध्याय

स्त्री और पुरुष

शर्फउद्दीन का ठीक अवसर पर पहुँच जाना मोतीबाई को ईश्वरीय सहायता थी अन्यथा उसके अपमान में सन्देह नहीं रहा था। उसने भी अपनी सहायता आप की। इसलिये आकाश से सहायता का उठाना अनिवार्य था। ईश्वर सदा उनका सहायक होता है जो अपनी सहायता आप करते हैं। जो ऐसा नहीं करते, ईश्वर उनकी सहायता नहीं करता। उसकी सहायता करके शर्फउद्दीन उसी समय उलटे पांव लौट गया।

मोतीबाई का जगत गुरु के यहां बुलाया जाना साधारण घटना होती हुई भी असाधारण घटना बन गई। तेलंगियों की हिम्मत बँधी। वह खुश हुये और उसे अधिक सम्मान की दृष्टि से देखने के लिये विवश हुये। पवित्र तो वह पहिले ही से समझी जाती थी। जगत गुरु से आमने-सामने साहसपूर्वक सामना करने के कारण उसके बड़प्पन को चार चांद लग गये।

घर पर आते ही उसने एक स्त्री के द्वारा रामपुर की स्त्रियों को कहला भेजा कि अब मैं यहां से शीघ्र जाने वाली हूँ। जिसको मुझसे मिलना हो वह आकर मिलले। यह सूचना क्षण भर में कुल गांव में फैल गई। शाम की कथा में गांव के कुल स्त्री पुरुष उसके यहां आ गये। बैठने को जगह नहीं रही। क्रिस्टिया राव अपनी चंडाल चौकड़ी सहित वहाँ आया। जगत गुरु ने सुना कि मेरे दुर्व्यवहार के कारण भक्तिनी मोतीबाई यहां से भागी चली जा रही है। वह भी समझदार मनुष्य था। अपनी गलती पर मन ही मन में लज्जित हुआ। उसका अपमान मोतीबाई से भी कहीं अधिक हुआ था। लोक परलोक का गुरु नाम रखकर आज उस अपनी मूर्खता से मजिस्ट्रेट के

सामने बयान देना पड़ा। इससे अधिक अपमान क्या होगा! उसने उसी भक्तिनी के निवास स्थान पर क्षमा माँगने की नीयत से जाने की इच्छा प्रगट की। दीवान आदि ने बहुत मना किया कि यह पद के नियम के विरुद्ध होगा लेकिन उसने एक भी न सुनी। अपने साथियों को लिये हुये वह उस जगह ठीक उस अवसर पर पहुँचा जब उसका घर आदमियों से भर चुका था। उसने तुरन्त बिना आगा-पीछा सोचे उससे कह दिया कि "मैं केवल पश्चाताप और गलती की क्षमा मांगने आया हूँ।"

जगत गुरु का सम्मान बादशाह से भी अधिक किया जाता है। यह ठीक है कि यह केवल विशेष श्रद्धालुओं तक सीमित है लेकिन श्रद्धालु वर्ग हर प्रकार के विचार वाले वर्गों से अधिक शक्तिशाली समझा जाता है। उसके आते ही सब लोग आदर पूर्वक उठ खड़े हुये। मोतीबाई स्वय बड़े अदब के साथ सामने आई। उसके चरणों में झुकी। लोगों ने झटपट मकान के बाहर फर्श आदि का प्रबन्ध कर दिया। एक किनारे पर सिंहासन बिछा दिया जिस पर सजा हुआ कालीन बिछाया गया और मसन्द रखकर जगत गुरु को उस पर बिठाया। मोतीबाई की चौकी उससे बहुत नीची थी लेकिन इतनी ऊँची थी कि फर्श पर बैठे लोग उसका दर्शन कर सकें।

जगत गुरु के जीवन में यह पहिली घटना थी कि वह इस तरह पब्लिक में आया वरन् साधारण रूप से जो लोग दर्शन को जाते थे बिना कीमती भेंट दिये दर्शन नहीं कर सकते थे। वह सिंहासन पर बैठ गया। उसकी आज्ञा पाकर सब लोग बैठ गये। रोशनी का प्रबन्ध ठीक था। क्रिस्टिया राव ने अपने घर से गैस की रोशनी के हंडे मँगाकर उचित स्थान पर रखवा दिये थे ताकि किसी को रोशनी की कमी की शिकायत न हो।

मोतीबाई अब तक खड़ी हुई थी। वह बड़े आश्चर्य में थी कि यह हो क्या गया कि जगत गुरु एक प्रतिष्ठित पुरुष उसके निवास स्थान

पर बिना बुलाये हुये आ गया। उसने उसे बैठने की आज्ञा दी। वह बैठ गई। सब चुपचाप प्रतीक्षा करने लगे कि इस असाधारण सभा में जगत गुरु की क्या आज्ञा होती है और किस तरह मोतीबाई के साथ व्यवहार करता है।

मोतीबाई के बैठते ही जगत गुरु ने स्वयं अपना भाषण आरम्भ किया। "बहिन भाइयो ! मैं जान बूझकर आपकी कथा में आकर विघ्न हुआ हूँ। आपको मालुम है कि मैं इस तरह न आम समूह में आता हूँ और न सबके सामने भाषण देता हूँ। आज का दिन मेरे प्रतिदिन के जीवन की घटनाओं में बिल्कुल असाधारण है। आपको प्रगट हो गया है कि मैं किसी बदनीयती के विचार से नहीं आया।

आज मुझसे अनसमझी से बड़ी गलती हुई। मैंने मोतीबाई की कदर नहीं की। उसे साधारण स्त्री समझा। इसलिये इस आम मजुमुआ में बिना सोचे समझे अपनी कमजोरी प्रगट करने और मोतीबाई से क्षमा माँगने के लिये आया हूँ। उसके चित्त को मेरे व्यवहार से बड़ी ठेस लगी। इसलिये मैं इस अवसर पर उसके हृदय की शान्ति के लिये आया हूँ। मेरा इस समय का आचरण स्वयं इस गलती की संवेदना के लिये कम है फिर भी मैं सच्चे हृदय से न केवल मोतीबाई से क्षमा मांगता हूँ किन्तु प्रण करता हूँ कि अब बिना पूछगछ किये मैं किसी विधवा के सिर मुंडवाने की कभी आज्ञा न दूँगा।"

इसके पश्चात तीन मिनट तक मौन रहे। इसके बाद मोतीबाई हाथ जोड़कर जगत गुरु के सिंहासन के सामने सिर झुकाकर बोली— "भगवन ! मैं क्या और मेरी इज्जत क्या ! आप एक बहुत बड़े धार्मिक मंडल (गिरोह) के आत्मिक बादशाह हो। इसलिये आपके मुकाबले में मेरी हैसियत ही क्या है ! मैं अबला स्त्री हूँ। न कोई मेरे आगे न पीछे ! स्त्री का शरीर दुनियां में आधीनता का दृश्य है। बचपन में माँ बाप की रक्षा और पालन पोषण की आधीनता, ब्याहे जाने पर पति की सेवा और उसकी हिमायत की आधीनता, पति के

मर जाने पर संतान के आधीन। यह कम से कम दुनियां में स्त्री की स्थिति है। मैं बड़ी दुर्भागिनी पैदा हुई कि बचपन में मां बाप और पूरे परिवार के लोग चल बसे। नाम मात्र को विवाह हुआ। पति का क्रियात्मक रूप से मुँह तक नहीं देखा और वह काल का ग्रास हुआ। सिर पर आपत्ति का पहाड टूट पड़ा। तीर्थ यात्रा को निकली। एक महापुरुष की चेली बनी और कथा वार्ता के कार्य के सिलसिले में उस महापुरुष के आदेश से जीवन व्यतीत करने का पाठ मिला। इसी कारण मैं रामपुर की कई हिन्दू स्त्रियों के आग्रह पर यहां आ गई। यह मेरी आपत्तियों की दर्द नाक राम कहानी है।

लेकिन हृदय कहता है कि आज से मेरा भाग्य शिखर पर पहुँच कर चमकने पर आ गया। शायद आज से मेरे जीवन में अच्छे दिन शुरू होंगे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि आप इस तुच्छ सत्संग में पधारे और इस तरह मेरा मान बढ़ाया। जो कुछ होने को था वह हो गया। इसमें आपका कोई दोष नहीं है। कर्म का कानून अटल है। जिस कानून ने राम को बन में घुमाया फिराया, जिसके कारण चक्रवर्ती युधिष्ठर को बनवास की दुर्गति उठानी पड़ी, उसी कर्म ने आज मेरे अपमान और मान दोनों का खेल खुली आंखों से दिखा दिया। मैं अच्छी तरह समझ गई कि दुखों की परकाष्टा हो चुकी।

वह आये घर में हमारे, खुदा की कुदरत है।
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं।

आपने मुझे ठेस नहीं पहुँचाई किन्तु कलेजे में गढ़े हुये कांटे को इस उपाय से निकालकर फेंक दिया। घाव तो होना ही था। विकृत पदार्थ के निकल जाने से कमजोरी का आना आवश्यक है। मैं आपके व्यवहार को जो गुप्त रूप से मुझ पर अहसान था, नहीं समझ सकी। शीघ्र क्रोध में आकर गुस्ताखी के शब्द मुँह से निकाल बैठी। मेरी दशा उस बच्चे के समान है जिसके फोड़े को डाक्टर चीरा

लगाता है। वह डाक्टर को गालियां देता है। अहसान के बदले बुरा भला कहता है। दोष आपका नहीं मेरा है। मुझे धीरज रखना था। मैं आपसे वाद विवाद करने लगी थी। आपका मुझ पर अहसान हुआ। आखिर मैं स्त्री हूँ। स्त्रियों को सब कम अकल कहते हैं। मैं अपने शब्दों के लिये आपसे क्षमा चाहती हूँ।

भगवन्! आप साधु और संत हो। आप दूसरों की भलाई के लिये प्रगट हुये हो। आप स्वयं कष्ट उठाते हो और दूसरों का भला करते हो। आपकी दृष्टि अवगुणों पर नहीं रहती। आप दुखों के दूर करने वाले और सुखदाता हो। आप लोगों का दुनियां में होना अच्छा और धन्य है।

सुख देवें दुख को हरें, दूर करें अपराध।
कहें कबीर वह कब मिलें, परम सनेही साध॥

यदि चित्त को चोट पहुँचाई गई भी तो उसका आवश्यकता से अधिक बदला भी दिया गया। घाव पर इतना ठंडक देने वाला मरहम रख दिया गया कि न अब उसमें टीस है न दर्द है और मैं सुख और चैन की दशा में हूँ। आपकी मुझे जरा भी शिकायत बाकी नहीं रही।

शिकवा न यार से न शिकायत रकीब की।
जो कुछ हुआ खुदा से, या हुआ नसीब से॥

भगवन्! जिस दया का भाव आपको मेरे झोंपड़े में लाया है, उसमें कमी न हो। यह प्रार्थना है। चूंकि साधुओं के चरणों में कोई आदमी बिना भेंट दिये नहीं झुकता, मैं इन फूल फलों को आपके भेंट चढ़ाती हूँ। यह शिवरी के बेर और सुदामा के टूटे फूटे चावल हैं आपकी जय हो!"

भाषण समाप्त होने पर मोतीबाई जगत गुरु के चरणों पर झुकी। वह संभल न सका। उसके शब्दों के प्रभाव में आकर साधुपने के नियम को भूल गया। सिर पर दया का हाथ रखते हुये उसे

छाती से लगाकर अलग कर दिया—'बेटी ! ईश्वर तेरा सदा सहायक हो।"

इस पारस्परिक क्षमा माँगने की घटना अपने ढंग से दिल भर आने वाली और प्रभावशाली थी। पुरुषों की आंखों में आंसू आगये। स्त्रियाँ तो फूट-फूटकर रो पड़ीं और हिचकियां लेने लगीं।

जगत गुरु ने मोतीबाई को बैठने की आज्ञा दी।

चौदहवाँ अध्याय

पुरुष और स्त्री (लगातार)

मोतीबाई बैठ गई। जगत गुरु ने उससे कहा—"बेटी ! कथा तो तू नित्य सुनाती होगी। आज मैं तुझ से स्त्रियों के बड़प्पन के विषय में भाषण सुनना चाहता हूँ। इसने स्वीकार कर लिया।

मोतीबाई ने इस तरह से भाषण आरम्भ किया :—

"भगवन् ! स्त्री और पुरुष रचना में एक ही तत्व के दो रूप हैं। यों समझ लीजिये कि तत्व एक था। उसने अपने को दो बराबर भागों में बाँट लिया जैसे मटर या चने के दो दाने आपस में मिले हुये दो बराबर टुकड़ों में अलग होते हैं।

यह अलग होकर जब मिलते हैं और मिलकर अलग होते हैं तब इन्हीं से सृष्टि के जीव जन्तु आदि उत्पन्न हो जाते हैं।

इनमें से एक ऋणात्मक है एक धनात्मक है। एक बाहर निकलने वाली शक्ति है एक सोखने वाली शक्ति है। एक प्रकाश है दूसरी छाया है आदि आदि। ऊँचे प्राकृतिक मडल में उनकी यह हैसियत है। यह प्राकृतिक शक्तियां कहलाती हैं। यह हमेशा जोड़े में हुआ

करती हैं।

रचना धनात्मक और ऋणात्मक के मेल से होती है। जब गर्मी और तरी (ठंडक) मिलती हैं तब रचना होती है। प्रकाश और छाया का मिलाप रचना है।

उससे थोड़ा नीचे उतर कर सूक्ष्म शरीर के मंडल में यह सूर्य चन्द्रमा आदि बनते हैं। जितने तारागण लोक लोकान्तर हैं, बिना जोड़े के कोई नहीं हैं।

उससे नीचे उतरकर स्थूल शारीरिक मंडल में एक पुरुष है दूसरी स्त्री है। एक शेर है दूसरी शेरनी है। आदि आदि। जब यह आपस में सम्भोग करते हैं तब उत्पत्ति का क्रम चल निकलता है।

इस स्थूल शारीरिक मंडल से और नीचे उतर कर इन्द्रिय मंडल में एक दाहिनी खोपड़ी है दूसरी बाईं। एक दाहिनी आँख है दूसरी बाईं। एक दाहिनी नाक है दूसरी बाईं। और भी इस तरह से हैं। यह सब भी जोड़े ही जोड़े हैं।

इसी तरह प्रकृति के हर मंडल में चाहे वह देश काल पात्र और की दृष्टि से हो हर जगह जोड़े रहते हैं। सम्भव है वह कहीं मिले-जुले हों जैसे स्थावर, जगम और बनास्पति आदि में प्रबन्ध है। कहीं-कहीं अलग दिखाई पड़ते हैं जैसे हम पुरुष स्त्री की दशा में पाते हैं। लेकिन वह सब हैं दो दो। पुरुषत्व और स्त्रीत्व पने से इनमें से कोई भी रहित नहीं है।

यह मैंने सिद्धान्त की बात संक्षेप में कहदी। इसे जितना चाहो बढ़ाते चलो। इस रियाअत और तुलनामें कहीं भी अन्तर नहीं है।

यह केवल भूमिका है। अब मैं आगे बढ़ती हूँ।

——:o:——

इनमें स्त्री आगे और मुख्य है। वह आगे चलती है और पुरुष उसके पीछे रहता है। यह सच्चा प्राकृतिक नियम है। पावन तोला

पाव रती। इसमें एक जगह भी अन्तर दिखाई न देगा। उसका प्रमाण यह है कि प्रकाश के प्रगट होने के पहिले छाया या धुंआ ही पैदा होता है ।

छाया ही से प्रकाश की पहिचान होती है। वह न हो तो प्रकाश का ज्ञान असम्भव हो जाये। ब्रह्म के साथ माया है। विष्णु के साथ लक्ष्मी है, ब्रह्मा के साथ सावित्री और शिव के साथ पारवती है। यह सृष्टि के ऊपरी भाग में प्राकृतिक शक्तियाँ या दिव्य शक्तियां कहलाती हैं। माया ब्रह्म से पहिले है। विष्णु की अगुआ लक्ष्मी, शिव की पारवती और ब्रह्मा की मार्ग दर्शक सावित्री।

इसी दृष्टि से स्त्रीलिंग का नाम पुल्लिग के नाम से पहिले आता हैं जैसे लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, सावित्री ब्रह्मा आदि। प्राचीन ऋषि इसी तरतीब से स्त्रीलिंग के मुख्य होने को ऐसे नामों से प्रगट करते थे।

मैं स्त्रियों को कथा सुनाती हूं। यह सूफी वृति की नहीं होतीं अन्यथा मैं गुण और गुणी, खुदाई और खुदा, सत्त और सत्ता के शब्दों से इस बिषय को स्पष्ट कर देती।

माया की सहायता के बिना ब्रह्म का हाथ आना असम्भव है। गुणों की सहायता के बिना गुणी का समझना कठिन, सत्ता के सहारे के बिना सत की पहिचान नहीं हो सकती।

—०—

पुरुष निकालने वाली शक्ति और गर्मी है। स्त्री ग्रहण करने वाली शक्ति और तरी है। बर्तन न हो तो वस्तु किसमें रक्खी जाय। इसलिये वह मुख्य है।

मानव वर्ग में भी स्त्री का नाम पुरुष से पहिले आता है। जैसे सीता राम, राधा कृष्ण, राधा रमन, आदि आदि। यह प्रमाण है कि स्त्री पुरुष की अगुआ है। कोई-कोई स्त्री को पुरुष की अपेक्षा अच्छे अर्ध भाग होने का अधिकार देते हैं उसका कारण प्रगट है।.....

—:०:—

पालन पोषण के विषय में स्त्री पहिले संतान का पालन करती है। पुरुष की बारी पीछे आती है। यह अपना रक्त (दूध) पिलाती है। पुरुष अन्न बाहरी दुनियां से लाता है। इसलिये स्त्री आदि अन्न दाता है।

शिक्षा भी स्त्री सन्तान को पुरुष से पहिले देती है तथा सिखाती पढ़ाती और हर वस्तु का नाम व निशान आदि बताती है। पुरुष पीछे से उसे दूसरों से शिक्षा दिलवाता है। इसलिये स्त्री ही बुद्धि दाता और सरस्वती है।

बलवान बनाने की दृष्टि से स्त्री ही पहिले सन्तान को उठा बिठाकर बलशाली बनाती है। पुरुष बाद को उसे अखाड़े और युद्ध क्षेत्र में भेजता है इसलिये स्त्री ही बलदाता और पार्वती है।

इसी दृष्टि से मैंने कहा था कि स्त्री गुरु हो सकती है और रचना में पहिली गुरु केवल स्त्री ही है।

भगवन्! यह संक्षिप्त भाषण केवल भूमिका है और इसी में स्त्री की मुख्यता का रहस्य भरा हुआ है।

संसार के जिन गुरुओं ने इस रहस्य के समझने में गलती खाई उनको मुँह की खानी पड़ी।

सुनिये! स्वामी शंकराचार्य बनारस में गये। शक्ति पूजा का विरोध करते थे। जब देखो शक्ति की बुराई! एक बार वह बड़े बीमार हुये। कपकपी का बुखार चढ़ आया। मनकंका घाट की सीढ़ियों पर निर्जीव होकर पड़ रहे। प्यास लगी। इतनी शक्ति नहीं थी कि दो सीढ़ियां नीचे उतर कर पानी पीलें। एक शूद्रानी पानी का घड़ा लिये हुये जा रही थी। आपने कहा—"माई! प्यासा हूँ। थोड़ा पानी पिलादो।" वह बोली "मोटा ताजा हट्टा कट्टा मरदुआ है। पांव के नीचे गंगा बह रही है। थोड़ा उतर कर क्यों नहीं पी लेता।" उन्होंने कहा–"क्या करूँ, शक्ति नहीं है।" वह हँसी–"मूर्ख

रोज गला फाड़-फाड़कर काशी में शक्ति की निन्दा करता है और आज कहता है कि शक्ति नहीं है। जब तू शक्ति के बिना गंगा जल नहीं पी सकता तो फिर शक्ति के बिना ब्रह्मामृत कैसे पी सकेगा !" यह लज्जित हुये। क्षमा मांगी और तब वह माई पानी पिलाकर चली गई। इनको चेत हो गया।

—:o:—

शंकर स्वामी विशेश्वरनाथ महादेव के मन्दिर से जा रहे थे। भंगन टोकरा लिए हुये जा रही थी। बोले—"माई ! हट जा। तू तो ऐसे चलती है जैसे मुझे छूना चाहती है। मैं ब्राह्मण हूँ।"
वह हँसी—"वाह ब्रह्मवादी ! छूतछात की एक ही कही ! तू तो अभेदवादी और द्वैतवादी है। सब में ब्रह्म को देखता है और मुझ में तुझे भंगन दिखाई पड़ती है।" यह पानी-पानी हो गये।

—:o:—

दूसरे अवसर पर यह पुरुषों को स्त्रियों से बचने का आदेश दे रहे थे और उन्हें नर्क की खान सिद्ध कर रहे थे। भाषण बड़ा प्रभाव-शाली था। इस सभा में एक स्त्री घुस आई और इनकी बात-चीत को काटकर बोली—"शंकर ! तू कैसा कपूत है ! जिस मां के पेट से पैदा हुआ उसी की बुराई करता है। स्त्री यदि नर्क की खान है तो तू भी तो नर्क का चीथड़ा बनकर उससे निकला है। जो नमक की खान से निकले वह नमक ! जो पत्थर की खान से निकले वह पत्थर ! अधूरे से निकला हुआ अधूरा; पूर्ण से निकला हुआ पूर्ण ! स्त्री को नर्क की खान न कह। देवी कहना सीख। यदि अब भी नहीं समझता तो जा कुछ दिनों ऋगवेद के देवी सूक्त का पाठकर, तब सार को समझेगा।" वह बड़े लज्जित हुये।

भगवन् ! यह स्त्रियों के बड़प्पन के कुछ साधारण उदाहरण हैं। कपिल दर्शनशास्त्र के रचियता कहलाते हैं। उनका दर्शन ज्ञान सांख्य दर्शन कहलाता है। यह ज्ञान उनकी माता देवहुति से मिला

था। दत्तात्रेय को गुरु भक्ति की शिक्षा उनकी माता अनुसुइया ने दी थी। इसी से समझ लीजिये, यह स्त्री जाति की मुख्यता है और बस।"

मोतीबाई ने अपना भाषण समाप्त किया। जगतगुरु ने उसे शाबास दी। सब लोग अपने-अपने घरों को चले गये।

—:o:—

पन्द्रहवां अध्याय
चंडाल चौकड़ी

रात को मोतीबाई की कथा सुनी। दूसरे दिन जगत गुरु वहां से चल दिये। शर्फउद्दीन की जाँच से उसको भय हुआ। यों भी वह केवल एक हफ्ते के लिये आया था। कौन व्यक्ति तीन-तीन सौ रुपया प्रतिदिन भेंट देकर अपने गाँव में ठहराये! मोतीबाई ने उसे कई लाभदायक बातें सिखाईं जिन्हें इस जन्म में तो कभी भूलने वाला नहीं था।

कथा के समाप्त होने पर उसने स्त्रियों से मिलकर जाने की इच्छा प्रगट की। स्त्रियों ने तो हठ नहीं की क्योंकि वह उसकी श्रद्धालु हो चुकी थी। उसकी एक-एक बात को ईश्वर का बचन समझती थीं। लेकिन पुरुषों ने कुछ दिन और ठहरने के लिये आग्रह किया। उनको कथा का रस मिलने लगा था। मोतीबाई ने आपत्ति की मगर उन्होंने एक नहीं सुनी। विवश उसे अपना विचार बदलना पड़ा।

क्रिस्टिया राव भी अब नित्य कथा में आने लगा। लेकिन वह भक्ति भाव के विचार से नहीं आता था। उसके चित्त में मोतीबाई का ख्याल दृढ़ता के साथ जम चुका था। रात दिन उसी के ध्यान में रहता था। दिन में तो उसे आने का साहस नहीं होता था मगर

रात को कथा का बहाना मिल गया था। प्रतिदिन आता और उसे देख जाता। मनुष्य का मन भी विशेष प्रकार का बना हुआ है। अनुभव हो जाने और ठोकरें खाने पर भी वह संभलने पर नहीं आता।

एक दिन वह घर में बैठा हुआ था। उसके चारों यार आये। वह अकेला था। चिन्ता में था। उन्होंने आते ही पूछा—"कहो क्या हाल है ?"

क्रिस्टिया राव—"अच्छा है। जो दिन बीतते हैं अच्छे ही बीतते हैं।"

रंगराव—"अच्छे तो नहीं गुजरते। मन में काला और रंग में भंग है। चेहरा देखने से मन की दशा का पता लग जाता है।"

क्रिस्टिया राव—"बात तो सच कह रहे हो। इसके सच होने में सन्देह नहीं है। जब मन में आग लगी होती है तो आँख और मस्तक से आग निकला करती है बल्कि सारा शरीर भीतर ही भीतर जलता रहता है।"

रामू—"आग के बुझाने के सैकड़ों उपाय हो सकते हैं पानी बरसा दो, धूल डाल दो रेत झोंक दो वह बुझ जायेगी।"

क्रिस्टिया राव—"लेकिन यह आग ऐसी नहीं है जो बुझाये बुझ सके।"

शामलू "तो फिर जलो भुनो। कोई क्या करे ! यदि जलना भुनना तुम्हारे भाग्य में लिखा है तो वह किसी रोके कब रुक सकता है। भाग्य के दुख उपाय से नहीं टलते।"

नरसिंघेलू—"तुम क्या कहते हो। क्रिस्टिया राव भाग्य के धनी हैं जो चाहा कर लिया। जिसकी ओर आँख उठाकर देख लिया, वह अपना हो गया। जिसे शत्रु की दृष्टि से देखा, जल भुनकर भस्म हो गया। हम तो उसे वर्षों से देख रहे हैं।"

क्रिस्टिया राव—"समय-समय की बात है। जो काम जिस समय

हो गया, समझलो हो गया। न हुआ तो फिर नहीं भी होता।"

रामू—"नरसिंघेलू का विचार ठीक है। जो भाग्यशाली हो उसका ईश्वर सहायक। बड़े-बड़े पत्थर छाती पर रक्खे गये, सब बड़ी सरलता से आप ही आप उठ-उठकर हवा में पतंग की तरह उड़ गये।"

शामलू—"इसमें सन्देह ही क्या है! देखो न मियां शर्फउद्दीन बुरी तरह पीछे पड़ा है। दो बार बच्चा क्रिस्टिया राव को फँसाने को आया, दाल गलाये न गली।"

नरसिंघेलू—लेकिन आदमी बड़ा चतुर मालुम होता है। पहिली बार तो खैर घटों पहिले सूचना देकर आया। इस बार ठीक समय पर आकर पहुंच गया वर्ना कौन जाने क्या हो जाता। झगड़ा होने में कुछ ही कमी रह गई थी।"

रामलू—"मैं मानता हूँ आदमी चतुर है। जिस काम के पीछे पड़ता है उसे बड़ी चौकसी से करता है। मैंने सुना है सरकार आली उसके कार्यों से खुश होकर तरक्की देना चाहती है। क्या आश्चर्य वह इस जिले से शीघ्र बदल जाये।"

शामलू—"अच्छा हो, वह किसी तरह चला जाय।"

क्रिस्टिया राव—"हूँ! मैं ऐसे शर्फउद्दीन को जब चाहूं दीपक की तरह चाट जाऊँ।"

रामू—'यदि तुम ऐसे साहसी हो तो इस भवकती हुई आग को क्यों नहीं बुझा देते, जो तुम्हारे रक्त को चाट रही है।"

क्रिस्टिया राव—'मेरे वश में नहीं है। ईश्वर जाने में क्यों पेचताव में पड़ गया। मैंने जीवन में वह-वह काम किये है जो कठिनता से किसी ने किये होंगे। यहाँ मेरे दाव पेच काम नहीं देते।"

नरसिंघेलू—"यह बात ही बात है। तुम शेर हो। हमेशा नया शिकार मारते रहे हो। यहां तुम्हें क्या हो गया।"

क्रिस्टिया राव—"कुछ ऐसा ही मामला है।"

शामलू—"मुझे भी आश्चर्य मालुम होता है कि प्रसिद्ध शेर अवसर के समय गीदड़पना प्रगट करे। हमको क्यों नहीं कहते ? तुम से नहीं हो सकता तो हम ही तुम्हारे लिये किस्मत आजमाई करें।"

नरसिंघेलू—"किस्मत आजमाई न करो। जोर आजमाई करो। जोर से सब कुछ हो सकता है।"

शामलू—"केवल तुम्हारा इशारा हो जाय और हम क्षण भर में उलझी हुई गुत्थी को सुलझा दें। यह तो हमारे बायें हाथ का खेल है। तुम व्यर्थ असमंजस में पड़े हो।"

क्रिस्टिया राव—"सिवाय तुम्हारे और मेरा साथी कौन है ?"

रामू—"भाई सच तो है। हम पाँच आदमी हैं। पांच आदमियों का मिलाप हर काम में अच्छा समझा जाता है—

पाँच पंच मिल कीजे काजा। हार जीत नहिं आवे लाजा॥

शामलू—"तुम मुँह क्यों नहीं खोलते। जरा संकेत करो और मैं आकाश में थेगरी लगाऊँगा।"

क्रिस्टिया राव—"कई बातों का ख्याल है। एक ओर तो इस शर्फउद्दीन के कारण चिन्ता है। वह बुरी तरह पीछे पड़ा है यद्यपि मुझे उसकी तनिक भी परवाह नहीं है। दूसरी ओर मामू साहब का डर है। तीसरे मैं जिस सौदा को पक्का कर रहा हूँ वह खतरनाक है।"

नरसिंघेलू—"तुमने केवल तीन कठिनाइयां बताई हैं और हम पांच आदमी हैं। पाँच काम होते तो हिस्सा बराबर होता। तीन हैं तो तीन ही सही। जिसको जिसके योग्य समझो, उसे उस काम में लगा दो।"

रामू—"ठीक तो है। तीन आदमी कामों पर नियत किये जांय। एक आदमी देखभाल का काम करे। क्रिस्टिया राव आराम से सोये रहें।"

क्रिस्टिया राव—"बात तो ठीक कहते हो लेकिन जल्दबाजी

करना अच्छा नहीं । जान जोखम का मामला है ।"

नरसिंघेलू—"फिर क्या हुआ । यही कि मार दिये जायेंगे । एक न एक दिन तो मरना ही है । मित्र मित्र के काम आते हैं । यह अच्छा या और तरह मरना अच्छा ! तुम तनिक भी चिन्ता न करो । आज्ञा देदो । और देखो कि किस तरह हम जान पर खेलते ।

क्रिस्टिया राव | "शाबास ! तुमसे ऐसी ही आशा है । लेकिन धीरज धरो ।"

शामलू—"कब तक धैर्य धरें ! समय नियत करो ।"

क्रिस्टिया राव—"एक हफ्ते के बाद कहूँगा ।"

सोलहवां अध्याय

अपना काम आप करना

क्रिस्टिया राव धुन का तो पक्का था लेकिन किसी कारण असमंजस में पड़ा हुआ था । यह असमंजस बलाये जान है । वह कथा में प्रतिदिन आता रहा । जगत गुरु के चले जाने के बाद उसने स्वयं ही मोतीबाई के पास जाकर मिलने और बातचीत करने की इच्छा प्रगट की । यह हँसी—"तुम नित्य आकर मेरी बातें सुनते हो । इससे अधिक और क्या कहोगे सुनोगे । इसने उत्तर दिया—मैं और तरह की बातें करना चाहता हूँ ।" उत्तर दिया—बहुत अच्छा ! कल दोपहर के बाद पोच अम्मांदेवी के मन्दिर पर आओ । मैं आऊँगी ।"

ऐसा ही हुआ यह समय पर वहां गई । यह पहिले ही से मौजूद था ।

मोतीबाई ने त्यौर बदलकर कहा—"कहो क्या कहते हो ?

क्रिस्टिया राव—"मैं कब तक इस जीवन के दुख सहता रहूं ।"

प्रकृति में यह अधिकार नहीं दिया गया। तुम गलत कहते हो · झूँठी बात को मैं कैसे सच मानूँ।"

क्रिस्टिया राव—"बहुत हो चुका। अब दया करो।"

मोतीबाई—"तुम मेरे अपराधी नहीं हो, जो मैं दया करके तुमको क्षमा करूँ।"

क्रिस्टिया राव—"अपराधी तुम हो।"

मोतीबाई—"मेरा अपराध क्या है ?"

क्रिस्टिया राव—"अपराध यह है कि तुम इतनी रूपवती हो।"

मोतीबाई—"प्रथम तो मुझे पता नहीं है कि मैं रूपवती हूं और यदि मानलो कि ऐसी हूँ तो यह उसका अपराध है जिसने मुझे बनाया। फिर इससे तुमको क्या ? मैं चाहे रूपवती हूँ या कुरूप ! तुमको मेरी सुन्दरता और कुरूपता से क्यों चिन्ता है। न मैं तुम्हारी लड़की हूं, न बहिन हूं, कि तुम्हें मेरी चौकीदारी करनी पड़ती। तुम व्यर्थ चिन्तित हो। काज़ी जी क्यों दुबले ! शहर के अदेशे से ! जाओ अपना काम करो। इन व्यर्थ बातों में समय नष्ट करना है।"

क्रिस्टिया राव—"भौंरे से कहो कि कमल के चारों ओर न मंडलाये। पतंगे से कहो कि दीपक की परिक्रमा न करे, मोर से कहो कि बादल होने पर नाच न नाचे, मक्खी से कहो कि फूल पर न बैठे ! यह सम्भव कब है !"

मोतीबाई—"तुम कवि भी हो। इसकी जानकारी मुझे नहीं थी। मैं भी इस तरह की बहुत बातें बना सकती हूँ। मेह से कहो न बरसे, बादल से कहो न गरजे, बिजली से कहो न चमके। यह सम्भव कब है !"

क्रिस्टिया राव—'तुम तो मुझको बनाने लगी हो।'

मोतीबाई—"तुम आप बने बनाये आये हो। मैं तुम्हारी बनाने वाली कैसी ! यदि मैं तुम्हारी माँ होती तब भी कहीं तक तुम्हारा कहना ठीक होता। मां अपने बेटे की बनाने वाली कही जा सकती

है। क्या मुझे अपनी माँ समझते हो ?"

क्रिस्टिया राव—"नहीं।"

मोतीबाई—"फिर ?"

क्रिस्टिया राव—"मैं तुमको कुछ और समझता हूँ।"

मोतीबाई—"मुझे इस 'कुछ और' की समझ नहीं है। यदि तुम कुछ और समझते हो तो बहुत अच्छा ! तुम्हारी समझ तुम्हारे साथ। जाओ मुझे कुछ और समझा करो। मेरी क्या हानि है ! मैं तो जैसी हूँ वैसी हूँ। साधारण इन्सान और निर्धन लड़की ! मैं यह हूँ 'कुछ और' नहीं हूँ।"

क्रिस्टिया राव—"तुम्हें बातें बनानी बहुत आती हैं। बातों के उलट फेर कर देने की बड़ी योग्यता है।"

मोतीबाई—"फिर इससे तुमको क्या ! कहीं मेरी योग्यता से तुम्हें ईर्ष्या तो नहीं है ? इसके अतिरिक्त मैं तुम्हारी राह में रुकावट तो नहीं हूं जो तुम्हें द्वेष का भय होता। जाओ अपना काम करो ! इन बातों में क्या धरा है ?"

क्रिस्टिया राव—"अफसोस ! जान बूझकर अनजान बने जाते हो। कैसी दानाई है, नादान बने जाते हो।"

मोतीबाई—"मुझे कविता करना नहीं आता।"

क्रिस्टिया राव—"तुम कविता की तत्व हो।"

मोतीबाई—"मैंने तुमको वार्तालाप को बहुत अवसर दे दिया। मैं अब जाती हूँ।"

क्रिस्टिया राव—"नहीं ! अभी तो तुमने मेरी कोई बात नहीं सुनी।"

मोतीबाई—"अब तक यह हुआ क्या है ?"

क्रिस्टिया राव—"मैंने अभी तक कुछ नहीं कहा।"

मोतीबाई—"क्या मैंने तुम्हारा मुँह बन्द कर रक्खा था ! तुमको मना किसने किया है। अब भी मैं दो चार मिनट दे सकती हूँ। कहो,

देर न करो। मुझे शीघ्र वापिस जाना है।"

क्रिस्टिया राव—"मुझे अपने साथ रखने से इन्कार न करो।"

मोतीबाई—"मैंने तुमको साथ रखना स्वीकार कब किया था! मुझे न इन्कार है न स्वीकार है। तुम अपने घर रहो। मैं अपने घर रहूँ। न मुझे तुमसे वास्ता न तुम्हें मुझसे प्रयोजन! बस कि और कुछ!"

क्रिस्टिया राव—घाव पर घाव कलेजे पै दिये जाते हो।
हाय अफसोस मेरी जान लिये जाते हो॥

मोतीबाई—"बेतुकी बातों से मुझे घृणा है। या तो अपना मन्तव्य कहो या अब जाती हूँ।"

क्रिस्टिया राव—"तुम विधवा हो।"

मोतीबाई—"तुम्हारी बला से।";

क्रिस्टिया राव—"मैं रंडुआ हूँ।"

मोतीबाई—"तो जाओ, विवाह करो। हिन्दुओं में पुरुष चाहे जितने विवाह करे, उसे रोकता कौन है! हां, विधवाओं को दूसरा विवाह करने की शास्त्रों में आज्ञा नहीं है।"

क्रिस्टिया राव—"यही तो मैं कह रहा हूं कि विवाह हो जाय।"

मोतीबाई—"तो तुम मुझसे सम्मति लेना चाहते हो। बहुत अच्छी बात है। मैं खुशी से तुमको राय दे रही हूँ। झटपट विवाह करलो। पुरुष के लिये ब्रह्मचर्य अविवाहित जीवन अच्छा नहीं होता। सौ तरह की बलायें पीछे पड़ी रहती हैं।"

क्रिस्टिया राव कुछ और कहना चाहता था। मोतीबाई ने पीठ फेरी। घर का रास्ता लिया। वह देखते का देखता रह गया।

सत्तरहवाँ अध्याय

बूढ़ा तेलंगी ब्राह्मण

मोतीबाई क्रिस्टिया राव से मिलकर घबराई । राह में वह बूढ़ा तेलंगी ब्राह्मण मिला । यह इसकी कथायें नित्य प्रति सुनने आता था। इसका नाम वेंकटेश्वर राव था । कम बोलना उसके जीवन में विशेष बात थी । बिना आवश्यकता न किसी से मिलता था न किसी से बात करता था । लोग उसका आदर करते थे ।

मोतीबाई को निवास स्थान की ओर जाते हुये देखकर वह उसके साथ हो गया ।

मोतीबाई ने पूछा—'बाबा ! क्या मुझसे कुछ कहना है ?"

वेंकटेश्वर राव ने दबे हुये ढंग में कहा—"चुप ! राह में बात करना उचित नहीं है ।"

दोनों साथ-साथ घर पहुँचे ।

मोतीबाई—"कहो अब क्या कहते हो ?"

वेंकटेश्वर राव—"क्या मैं तुम्हारा विश्वास कर सकता हूँ !"

मोतीबाई—"पारस्परिक विश्वास मेल मिलाप का परिणाम है । मैं आपसे परिचित नहीं हूँ । इसका क्या उत्तर दूँ ।"

वेंकटेश्वर राव—'मैं तुझसे थोड़ा सा परिचित हूँ, तू मुझे नहीं जानती ।"

मोतीबाई—"आप कौन हैं ?"

वेंकटेश्वर राब—"मैं कुदरत का दूत हूँ । वेंकटेश्वर राव मेरा नाम है ।"

मोतीबाई—"फिर क्या कहते हो ?"

वेंकटेश्वर राव—"मेरी दृष्टि तेरी चाल ढाल पर रहती है । केवल इतना इस समय कह सकता हूँ कि तू भारी ख़तरे में है । सावधानी

हर दशा में आवश्यक है ।"

मोतीबाई—"मेरे लिये क्या खतरा है ?"

वेंकटेश्वर राव—"माई ! यद्यपि तू पढ़ी लिखी पंडिता है मगर अभी थोड़ी आयु की है। यह आयु स्त्री के लिये भय से खाली नहीं रहती। पग-पग पर गड्ढे हैं। मैं आयु की दृष्टि से तेरा दादा और परदादा कहा जा सकता हूँ। बूढ़े की बात मानना और आंवले का खाना इनका स्वाद पीछे मिलता है।"

मोतीबाई—"आपकी सहानुभूति की मैं कृतज्ञ हूँ। लेकिन आप निश्चय रखिये मैं आत्मरक्षा के योग्य हूँ।"

वेंकटेश्वर राव—"तो फिर मैं जाता हूँ। बिना आवश्यकता किसी के काम में दखल नहीं देता।"

मोतीबाई—"आप अप्रसन्न हो गये। मेरा मन्तव्य अप्रसन्न करने का नहीं है।"

वेंकटेश्वर राव—"यह मैं जानता हूँ लेकिन तूने मेरी बात ध्यान से नहीं सुनी। बेपरवाही प्रगट की। बेपरवाही बेअदबी है। जब मैंने तुझसे कह दिया कि मैं गुरु का दूत हूँ और मेरी दृष्टि तेरी चाल-ढाल पर रहती है तो तुझे सोचना चाहिये था। मैं तेरी सहायता के लिये आया था। मैं निःस्वार्थ आदमी हूँ इसलिये तुझे साबधान करने आया था। सहायता तो मैं तेरी यथा शक्ति करता रहूंगा चाहे तू परवाह करे या न करे, यह मेरा कर्तव्य है। हां यदि तू सावधानी से रहती तो अच्छा था।"

मोतीबाई ने बूढ़े को ध्यान से देखकर कहा—"सम्भव है मेरे शब्दों में गलती हो मगर उनमें गलत फहमी नहीं है।"

वेंकटेश्वर राव—"सच है। मैं जानता हूँ। देखना संभलकर रहना। शैतानपने का जाल तेरे फांसने के लिये बुना और तना जा रहा है। ईश्वर न करे तू इसमें फँस जाये वर्ना यह कथा वार्ता एक भी काम नहीं आयेगी।"

मोतीबाई—"महाराज ! यह आप क्या कह रहे हैं।"

वेंकटेश्वर राव—"बेटी ! जान-बूझकर अनजान न बन ! स्वयं अपने बचन, कर्म और विचार पर गौर करो। अपना हाल हर व्यक्ति स्वयं जानता है। दूसरों को उसका ज्ञान कम होता है।"

मोतीबाई—"आपका इशारा क्रिस्टिया राव से होगा जिससे मैं दो बार मिली हूँ।"

वेंकटेश्वर राव—"मेरा स्वभाव किसी के नाम लेने या किसी को बदनाम करने का नहीं है। तू मिली अच्छा किया। न मिलती अच्छा होता। छोटी आयु की लड़की को जिसका परदेश में कोई हमदर्द और देखभाल वाला न हो, बचकर रहना चाहिये।"

मोतीबाई—"अब मैं सावधान रहूँगी। बाहर न जाऊँगी।"

वेंकटेश्वर राव—"अच्छा है तू कुछ राह पर आगई। लेकिन जब किसी जगह से स्त्रोत चालू हुआ तो आरम्भ में यदि मनुष्य चाहे तो उसे रोक सकता है। लेकिन जब धार गहरी और तेज हो गई तो उसमें पड़कर ऊँट और हाथी तक बह जाते हैं।"

मोतीबाई—"मैंने कोई बात ऐसी नहीं की जो मेरे विरुद्ध हो।"

वेंकटेश्वर राव—"यह ठीक है। मैं तेरी बातों को जानता हूँ। जब मैंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि तेरे चाल चलन पर दृष्टि रखता हूँ तो मैं अपरिचित नहीं हो सकता। लेकिन मैं देख रहा हूँ कि मकड़ी ताना बाना तन रही है और मक्खी धीरे-धीरे उसकी ओर अनजाने बढ़ रही है। उसके फँसने में सन्देह ही क्या है। आज नहीं तो कल वह फँसी हुई है। तुझे अनुभव नहीं है।"

मोतीबाई—"मैं अनुभवहीन और अज्ञानी अवश्य हुँ। अपने तौर पर सावधान होती हुई असावधानी की दोषी बन रही हूँ; यही आपका अभिप्राय है और मैं अपनी गलती स्वीकार करती हूँ।"

वेंकटेश्वर राव—"धन्य है ! तू इस निष्कर्ष पर तो पहुँची।"

मोतीबाई—"फिर आप क्या सम्मति देते हैं ? क्या मैं मिलना

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जुलना बिल्कुल बन्द करदूँ ।"

वेंकटेश्वर राव—'तूने अभी तक मेरे पहिले प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। मैंने पूछा था कि क्या मैं तेरा विश्वास कर सकता हूँ। तू चुप रही।"

मोतीबाई—"आप बेशक मेरा विश्वास कर सकते हैं।"

वेंकटेश्वर राव—"तो फिर और सुन। दो बार तुझसे मिलने की प्रार्थना की गई। दो बार तू पोच अमां के मन्दिर के चबूतरे पर मिली। मुझे इसका पता था। पहिले ही से मन्दिर में जा बैठा। बाहर छड़ों के राह से उसमें ताला लगा दिया ताकि कोई अन्दर न आये। और मैंने सब बातें सुनलीं।"

मोतीबाई ने फिर बुड्डे को बड़े आश्चर्य से देखा।

वेंकटेश्वर राव ने कहा—"आश्चर्य न कर! मैं बूढ़ा आदमी हूँ। रामपुर इस समय ज्वालामुखी पहाड़ की चोटी पर बसा हुआ है। पता नहीं वह कब भड़क उठे और यह गाँव का गांव नष्ट हो जाय। मैं जहां तक सम्भव है होशियारी से छुपे चोरी पीड़ितों को बचाता रहता हूँ। सब की सहायता करना मेरे काबू से बाहर है। जरा किसी को पता लगा नहीं कि मुझे जिन्दा चिता के अर्पण किया नहीं। इसलिये मैं सावधानी से काम करता हूं। तुझ में मैंने असाधारण साहस देखा। मैं ऐसे लोगों का विश्वास करता हूँ। अब तक मुझे किसी ने धोखा नहीं दिया क्योंकि वह सताये हुये थे और मेरे कारण आने वाली आपत्तियों से बच गये। तू परदेशी है। यहां कोई व्यक्ति आड़े समय तेरा सहायक न होगा। इसको निश्चय समझले।"

मोतीबाई—"मुझे जगत गुरु की घोषणा के समय इसका पूरा अनुभव हो गया है। लेकिन आप गरीब रामपुर को श्राप न दीजिये।"

वेंकटेश्वर राव—बेटी! जब पाप का घड़ा भर जाता है वह छलक उठता है कोई इसे रोक नहीं सकता। तूने सुना होगा कि हैदराबाद सा शहर बदमाशी का केन्द्र बन गया। दरियाय मूसा की

क्या हैसियत थी लेकिन उसके यकायक बाढ़ के पानी ने क्षण भर में सारे शहर को डुबोकर नष्ट कर दिया। हाथी घोड़े और लाखों आदमी नदी में बह गये। ऐसी घटनायें शायद संसार के और भागों में किसी ने देखी होगी। रामपुर छोटी बस्ती है और बुराइयों का घर बन गई है। पाप बढ़ता जाता है। फिर यह क्यों न नष्ट होगा! हाँ तुझ जैसी पवित्र देवी के प्रताप से यह बच जाय, तो दूसरी बात है। लेकिन बदला तो अवश्य देना ही पड़ेगा। प्रायश्चित करने से कभी-कभी बलायें टल जाती हैं।"

मोतीबाई—'आपका कथन बड़ा भयानक है।"

वेंकटेश्वर राव—"यह जले भुने हृदय के फफोले हैं। तुझे यहां के दुखियों की दर्द भरी कहानियों से परिचय नहीं है। तू पवित्र देवी है। कौन जाने तू इस दुर्भागी गांव के बचाने ही के लिये आई हो।'

मोतीबाई—"मुझे कांटों में न घसीटिये। मैं सरल स्वभाव लड़की हूँ।"

वेंकटेश्वर राव—"मेरे सामने हजारों आदमी गुजरे हैं। तुझे मैंने सब में अद्वितीय पाया। झूंठी प्रशंसा करना मेरा स्वभाव नहीं है। मुझे न किसी से कुछ लेना है न किसी को कुछ देना है। यहां जन्म लिया इसलिये रामपुर की भलाई का ख्याल चित्त में बैठा रहता है।"

मोतीबाई—"आपने मेरा विश्वास किया और अपना भेदी बनाया। मैं भी आपका विश्वास करती हूँ।"

वेंकटेश्वर राव—"मैंने अभी तक तुझे अपना भेद ज्ञाता नहीं बनाया। न किसी का नाम लिया, यद्यपि इसका मुझे ख्याल अवश्य है। मैं तेरी परीक्षा करता रहूँगा। यदि तू कुछ दिनों इसी तरह सचाई और भलाई की कसौटी पर पूरी उतरी तो तू मेरी अकेली भेदी बन सकेगी।"

मोतीबाई—"यदि ईश्वर न करे मैं गिर गई तब क्या होगा!"

वेंकटेश्वर राव—"इसका भय दिखाई नहीं पड़ता। गैर का देवता कभी तेरा साथ न छोड़ेगा। और यदि मानलो, गिर गई तो गिरावट स्वयं सदाचारी मृत्यु का दूसरा नाम है। फिर भी गुप्त दैवी सहायता तुझे मिलती रहेगी।"

मोतीबाई—"तो फिर अब मैं क्या करूँ !"

वेंकटेश्वर राव—"यहां से तू अब भागकर न जाने पायेगी। यदि जगत गुरु के कूच के दिन चली जाती तो चली जाती। अब जाना कठिन है क्योंकि जंगल का रास्ता है। शत्रु बड़े मेल मिलाप वाला है। चारों ओर से घेरने और कैद करने की कोशिश करेगा। खैरियत इसी में है कि चुपचाप अनुकूल परिस्थिति का इन्तजार कर। यों यदि तू मेरे कहने में चलेगी तो मैं इसका उचित प्रबन्ध कर दूँगा।"

मोतीबाई—"मैं अब मिलूँ या न मिलूँ।"

वेंकटेश्वर राव—"जिस बेपरवाही से अब तक मिलती रही है बेशक मिलाकर। वार्तालाप में गिरावट न आये। और मुझे हर बात की सूचना रहे ताकि मैं कीलकांटे से ठीक रहूँ। अब मैं जाता हूं। कभी-कभी तुझसे मिलता रहूँगा।"

अठारहवाँ अध्याय

मियाँ शर्फउद्दीन की मृत्यु

जंगल की आग की तरह रामपुर की गली कूचों में यह समाचार फैल गया कि मियाँ शर्फउद्दीन यकायक बीमार हो गये और दो ही चार घंटों में असार संसार से कूच कर गये। जाने और कूच करने को सबने देखा लेकिन कहाँ गये कहां नहीं गये इसकी किसको सूचना मिली है।

फिरा न मुल्के अदम से कोई कि मैं पूछूँ ।
मुसाफिरो कहो मंजिल पै क्या गुजरती है ।

आदमी भला था । भले को भलाई के भंडार में जाना था । वह उसमें जाकर लीन हो गया होगा । प्रत्येक वस्तु अपने असल की ओर खिचती है । मृत्यु अचानक थी । डाक्टरों ने लाश को देखा । एक डाक्टर ने कहा—हृदय की गति रुक जाने से मृत्यु हुई । दो को इसमें सन्देह था । उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लाश अस्पताल पहुँचानी चाहिये । चीर फाड़ हो । पेट की दशा देखी जाय । लेकिन उनके सम्बन्धी इस डाक्टरी सुझाव को मृतक की बेइज्जती समझते थे । लाश को कबरिस्तान में पहुंचाया । उसे गाढ़ दिया । जनाजे पर फातिहा पढ़ी । (दान पुन्य) सूमसलवा के बाद लोग घर वापिस आये और रोना पीटना मचाया ।

रामपुर के लिये साधारण रूप से यह घटना दुखदायी थी । सब को बड़ा शोक हुआ । इस शोक की जड़ में उनका स्वार्थ था क्योंकि स्वर्गवासी की नीयत थी कि रामपुर के दुराचारी जीवन को हमेशा के लिये धोया जाय ताकि फिर किसी तरह की शिकायत न रहे । आदमी निष्पक्ष था । जगत गुरु की बाबत उसने कोई रिपोर्ट नहीं लिखी । जाँच अवश्य की लेकिन वह जो जानना चाहता था उसका पता नहीं लगा । इसलिये इस साधु की गलती को जान-बूझकर छोड़ दिया । रामपुर वालों ने उसकी मृत्यु का शोक अपने मन ही मन में मनाया ।

लेकिन यह द्वन्द्व का जगत है । इस घटना से किसी को खुशी भी हुई । मेह बरसने से किसान खुश होता है लेकिन कुम्हार को दुख होता है । शोक और आनन्द केवल मन के भाव है । इसके सिवाय और क्या कहा जाये ! चंडाल चौकड़ी प्रसन्न थी ।

रामू ने कहा—"तीन ओर काली घटायें छाई हुई हैं । केवल एक ओर सूर्य का प्रकाश था । लो अब एक दिशा और भी साफ हो गई ।

बादल हटे और प्रकाश प्रगट हुआ। दो अंधेरी दिशायें शेष रह गईं। यह भी साफ हुई जाती है।"

शामलू—"आदमी चिन्ता न करे। अपने काम में लगा रहे। न दायें देखे न बायें। योंही सब कुछ बिना संघर्ष हो जाता है।"

नरसिंघेलू—"बिना संघर्ष के खूब कही! सघर्ष तो करना ही पड़ता है। बिना हाथ पैर मारे कब किसी का काम हुआ है!"

क्रिस्टिया राव—"तुमको पता है रंगराव इस समय किधर है?"

नरसिंघेलू—"वह रामपुर में नहीं आया। एक हफ्ते से लापता है।"

रामू—"लापता है तो लापता रहने दो। तुमको आप ही शीघ्र सूचना मिल जायेगी।"

शामलू—"धीरज धरो। किसी के बारे में इतनी शीघ्रता से निर्णय न करो। अब यदि पता है तो यह बताओ कि जो दो दिशाओं का अंधेरा रह गया है वह कैसे दूर होगा।"

क्रिस्टिया राव—"भाई! मैं तो कुछ न कर सका।"

रामू—"तुमको तो सबसे अधिक आशा थी। अपना काम आप करने चले थे। क्या आशा के टूटने के सामान पैदा हो गये?"

क्रिस्टिया राव—"कुछ नहीं कहा जाता। गोलमाल मामला है। निराशा तो नहीं है। जब तक जीना तब तक सीना। जब तक आसा तब तक बासा। विश्वास और अविश्वास दोनों साथ-साथ रहते हैं।"

रामू—"जरा सा मामला और इतनी देर! आश्चर्य है। फिर अचम्भा इस बात का है कि तुम्हारी ओर से इतनी सुस्ती पहिले कभी नहीं देखी गई थी। जिधर झुकते थे, शेर की तरह झुकते थे। अब क्या हो गया?"

क्रिस्टिया राव—"मेरी बुद्धि काम नहीं करती।"

रामू—"जब अपनी बुद्धि से काम न निकले तो और उपाय भी तो हैं। दूसरों की बुद्धि से काम लेने में तुमको क्यों हिचकिचाहट है?"

क्रिस्टिया राव—'इसका कुछ उत्तर मैं इस समय नहीं दे सकता।'

नरसिंघेलू—"सुनो ! जिसके पास पैसा है उसका भाग्य ऊँचा सोने को लोहे पर रखदो, वह मोम हो जाता है।"

क्रिस्टिया राव—"बहुत से ऐसे काम होते हैं जो धन दौलत से नहीं हो पाते।"

रामू—"यह गलत है। दुनियां में हर वस्तु का मूल्य है। कोई ऐसा आदमी नही है जिसका मूल्य नहीं लगाया जा सकता। रुपया जेब से निकालो और जिसे चाहो मोल लेलो।"

क्रिस्टिया राव—"यह बिल्कुल सच है और न झूँठ है। न हर वस्तु रुपये से मोल ली जाती है और न हर आदमी इसके जाल में फँसता है। तुमको केवल साधारण आदमियों का अनुभव है। विशेष वृति वालों को चित्त वृति अलग होती है। जैसे शर्फउद्दीन को न देखो ! इसका मोल लेना बड़ा कठिन काम था। ईश्वर ने हमारी सहायता की वर्ना बेढव आदमी से पाला पड़ा था।"

नरसिंघेलू—"मेरी राय में तो शर्फउद्दीन पर क्या है, जिसे चाहो कीमत दो और वह तुम्हारे हाथ आ जायेगा। यहां तक कि बड़े-बड़े अफसर तक मोल लिये जा सकते हैं। मेरा निजी अनुभव इसका साक्षी है। हां मूल्य मूल्य में अन्तर होता है। कोई थोड़े में मोल लिया जाता है और किसी को अधिक में। यह आदमी की योग्यता और उसके साधनों के विस्तार पर निर्भर है। सबको यह मालुम नहीं होता कि किसको किस उपाय से बाजार में लाया जाय।"

क्रिस्टिया राव—"मुझे इसमें सन्देह है।"

नरसिंघेलू—"केवल साहस की आवश्यकता है। इसकी कमी काम को बिगाड़ती है। इसे मैं मानता हूं वरना मेरा ख्याल यह है आदमी पर क्या पर निर्भर, आदमी यदि चाहे तो ईश्वर को मोल ले सकता है और मैं खुली आंखों से देख रहा हूं कि ईश्वर भी यहां बिकता रहता है। जो साहस वाला चाहता है उसे मोल ले लेता है।"

नरसिंघेलू—"दान दक्षिणा भी तो कोई चीज है। मन्दिरों में जाकर देखो ! ईश्वर की मूर्त्तियाँ वस्त्र और आभूषण से सजाई जाती हैं। जो लोग उनको पूजने जाते है फल फूल, जल, अक्षत, मिठाई, वस्त्र और रुपया पैसा भेंट लेकर जाते हैं। फिर यह उसके मोल लेने का मूल्य नहीं है तो और क्या है ! जब इनसे भी ईश्वर प्रसन्न न हो तो फिर जान के बदले जान दो। उसे भेड़ बकरे, भैंसे चढ़ाओ और वह वश में आ जायेगा। तुम ईश्वर भक्तों को इन उपायों से काम लेते हुये देखते हो और फिर भी संशय में पड़ते हो।"

क्रिस्टिया राव—"खूब ! नरसिंघेलू ! तुम भी अच्छे आदमी हो ! क्या ईश्वर मांस खाता है जो बलि देने से प्रसन्न होगा।"

नरसिंघेलू—'क्या ईश्वर फूल सूंघता, पान चबाता, फल मिठाई खाता और चावलों का इच्छुक है जो यह पूजने वाले उसके पास भेंट लेकर जाते हैं। ईश्वर यदि रुपया चढ़ाने से प्रसन्न नहीं होता तो उसके सामने यह नकद और नोट कैसे रक्खे जाते हैं। यदि यह सच बात है तो फिर बलि देने का भी ठीक होगा।"

क्रिस्टिया राव—"भाई ! जो बात की खुदा की कसम लाजबाब की। पापोस में लगाई किरन अफताब की।"

नरसिंघेलू—"यदि इनसे भी काम न निकले तो मंत्र जंत्र से उसे अपने जाल में फँसाओ। यह उपाय भी निरर्थक सिद्ध हो तो फिर उसकी स्तुति करो। सच तो यह है कि खुशामद से खुदा राजी है। लोग कहते हैं 'रोटी खाइये शक्कर से। दुनियाँ मारी मक्कर से।' और मैं कहता हूँ—काम न चले दरामद बरामद से। तो खुदा को खुश करो खुशामद से।"

रामू—"क्रिस्टिया राव अपना काम खुशामद से निकालना चाहते है।"

शामलू—"तभी तो काम नहीं निकलता। हर जगह खुशामद काम नहीं आती। नम्रता की भी हद होती है। नम्रता से काम न

निकले तो फिर सख्ती और गर्मी की आवश्यकता होती है। क्यों क्रिस्टिया राव ! ठीक है या गलत !"

क्रिस्टिया राव—"मैं इस पर सोच रहा हूँ।"

यह चारों आदमी इस तरह गपशप में व्यस्त थे कि रंगराव भी आ गया। उसे देखकर यह प्रसन्न हो गये। कहो भाई ! क्या खैर खबर लाये हो ?"

रंगराव—"खैर खबर तो पहिले ही मिल गई होगी। मुझसे क्या पूछते हो ! क्या तुमने अब तक नहीं सुना ?"

रामलू—"सुना गया ! दोनों मरहले तै कर लिये। अब तुम अपनी सुनाओ।"

रंगराव—"मैंने अपने हिस्से का काम कर लिया और काम बड़ी सुगमता से हो गया। सस्ता सौदा खरी मजूरी ! दाम दिया और चोखा काम ! इधर से तुमको सन्तुष्टि होगई।"

उसने जेब से कागजों के बंडल निकालकर सबके सामने रख दिये। वह एक-एक करके उसे देखते रहे। इनमें करेंसी नोट भी थे।"

रंगराव—"सन्देह तो हुआ था लेकिन खैरियत हुई। सब रफै-दफै हो गया। आदमी चतुर निकले। ऐसी चालाकी से काम किया गया कि किसी को किसी बात का पता तक नहीं है।

क्रिस्टिया राव—'तुम वास्तव में अद्वितीय हो। काम भी हो गया और रुपया भी लाये। साथ ही देर भी नहीं लगी।"

रंगराव—"मेरा हाल तो तुमने सुन लिया। अब कुछ अपना भी सुनाओ।"

शामलू—"हमने अब तक कुछ नहीं किया।"

रंगराव—"एक ही समय मैं बहुत से काम नहीं किये जाते। बीच में समय की भी आवश्यकता है और काम किया कराया मौजूद है। हाँ क्रिस्टिया राव दुविधा में पड़े हुये हैं। आंख से आंख मिली और इन पर जादू चल गया। बेवश होगये।"

उन्नीसवां अध्याय

मैं भूखी हूँ

रामपुर के गली कूँचे में एक रात को दो बजे से ढाई बजे तक यह आवाज सुनाई दी—'मैं भूखी हूँ।' आवाज करने वाले ने गांव के इस सिरे से लेकर उस सिरे तक हर जगह आवाज दी। सोने वाले सो रहे थे। वह समय नींद का होता है लेकिन सबकी नींद की दशा एक सी नहीं होती। कोई-कोई जाग भी रहे थे। उन्होंने उसे सुना। किसी ने घर से बाहर निकलकर देखने का साहस किया मगर आवाज तो सुनाई दी परन्तु आवाज देने वाला दिखाई नहीं पड़ा। ऐसे लोग कम थे जो बाहर निकले थे लेकिन श्रोता इनसे अधिक थे।

रात बीतने पर इसका चर्चा हर जगह होने लगा। कोई कहता था कि सम्भवतया कोई भूखी स्त्री रही होगी। किसी-किसी ने कहा कि यह आवाज पोच अम्मादेवी की थी। इस विचार के स्त्री पुरुष दोनों ही अधिक थे। दक्षिण में लगभग हर जगह पोच अम्मा के मानने वाले बहुत हैं। हिन्दू तो साधारणतया अन्धविश्वासी प्रसिद्ध हैं। लेकिन मुसलमान और ईसाई भी प्रायः इस पर विश्वास करते हैं और पोच अम्मां के नाम पर चढ़ावा चढ़ाया करते हैं।

राजपूताने ने प्रसिद्ध स्थान चित्तौड़ में भी इसी प्रकार की आवाज लगातार एक हफ्ते तक सुनाई दी। और उसी के बाद अलाउद्दीन खिलजी देहली के बादशाह ने पदमिनी रानी के लालच में चित्तौड़ पर चढ़ाई की। जिसमें चित्तौर के समस्त राजपूत कटकट मर गये। राजवंश का केवल बहुत छोटा लड़का जान-बूझकर दूसरी जगह भेज दिया गया था ताकि वंश बाकी रहे। पुरुष तो इस तरह समाप्त हुये। स्त्रियों ने बारूद की सुरंग पर बैठकर जौहर किया। बारूद को आग लगा दी। तड़ाके की आवाज हुई और यह सब की सब

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

भुलस कर मर गईं। यह ऐतिहासिक घटना है। विश्वासी हिन्दू उसकी व्याख्या उस समय यों किया करते थे कि देवी भूखी थी और बलिदान चाहती थी। बलिदान नहीं किया गया। इस कारण चित्तौड़ पर यह आपत्ति आई। यह विश्वास राजपूताने तक ही सीमित नहीं है। वैसे तो इस समय थोड़े आदमी इस विचार के होंगे लेकिन दक्षिण निवासी अधिकतर इस लकीर के फकीर हैं।

पोच अम्मा कौन है, इसका भी यहां बता देना आवश्यक है। पोच अम्मा चेचक की देवी का नाम है। बाल बच्चे वाले इसका नाम सुनते ही कानों पर हाथ धरते हैं। स्त्रियां विशेष दिनों में चढ़ावा लेकर देवी को प्रसन्न रखने के लिये मन्दिर में जा जाकर पूजा करती हैं ताकि उनके बच्चे देवी के कोप से बचे रहें। पूजा भी प्रायः रक्त की होती है। मैंमने और सूअर के बच्चे प्रायः काटे जाते हैं। वहां ब्राह्मण मांस नहीं खाते लेकिन कठिनाई से कोई ब्राह्मण घर निकलेगा जो रक्त का बलिदान करने से इन्कार करता हो। मुसलमान सूअर को हराम और बुरा मानते हैं लेकिन उनकी मूर्ख स्त्रियां भी चमार भंगी से जिबह कराया करती हैं। यह रिवाज मद्रास प्रान्त में आम है। हैदराबाद की सबसे बड़ी रियासत भी इससे बची नहीं है यद्यपि वहां मुसलमानी राज है और इस्लाम का हर जगह से अधिक वहाँ जोर है।

रात को आवाज सुनी गई और दिन भर सब में उसका चर्चा रहा। यही दशा तीन रात तक बराबर रही। पहिले दिन रात को दो बजे आवाज आई। दूसरी रात को १२ बजे और तीसरी को सुबह को पौ फटने से पहिले। प्रत्यक्ष में इस आवाज देने दिलाने में मनुष्य शामिल रहा होगा, क्योंकि आवाज देने के समय की भिन्नता इस बात की समर्थक है। लेकिन वह कौन लोग थे इसका पता किसी को आज तक न लगा। अन्ध विश्वास की भी बहुत बड़ी शक्ति होती है। जब कोई इस प्रकार का झूंठा ख्याल चित्त में जगह पा लेता है तो

फिर सोचने समझने की शक्ति खो जाती है और सबको इस बात की चिन्ता हो जाती है कि किसी तरह देवी को प्रसन्न किया जाय ताकि यह कोप आसानी से टल जाय।

क्रिस्टिया राव इस गांव का पटेल पटवारी था। उसने चार पुजारियों को बुलाया। उनसे सम्मति ली और यह राय हुई कि घर पीछे उचित चन्दा लगाया जावे और ठाठ बाट के साथ देवी की पूजा की जाय। भयभीत और कम समझ आदमी इस राय से सहमत हो गये। उनका राजी कर लेना क्या कठिन बात थी। जब वैदिक ब्राह्मणों का ऐसे कामों में हाथ हो तो फिर क्या कहना है। सबकी नकेल इनके हाथ में रहती है। जिधर जी चाहा उधर घुमाकर फेर दिया।

बहुत सा चन्दा किया गया जिसका हिसाब चंडाल चौकड़ी के हाथ में था। वैदिक ब्राह्मण प्रबन्धक थे। यह वैदिक ब्राह्मण दक्षिण के विशेष ब्राह्मण समझे जाते हैं। इनका सम्बन्ध या तो केवल पूजा पाठ से है या दावतों में जाकर भोजन बनाया करते हैं। यह उनका मौरूसी पेशा है। दूसरे ब्राह्मण व्यौपारी ब्राह्मण कहलाते हैं और यह नौकरी चाकरी या महनत मजदूरी या लेन देन का काम किया करते है। इन दोनों वर्गों में आपस में न विवाह होते हैं और न दूसरी तरह की साधारण बातें होती हैं। हां, व्यौपारी ब्राह्मण वैदिक ब्राह्मणों के हाथ का बना हुआ भोजन खा लेते है। वैदिक ब्राह्मण व्यौपारी ब्राह्मण का छुआ हुआ भोजन नहीं खाते।

—

जिस समय मैं काशी गया था वहाँ भी ब्राह्मणों में यह भेदभाव देखा। आश्चर्य हुआ कि वहां भी यही भेद है। नौकरी करने वाले ब्राह्मण कारकुन कहलाते हैं और असली ब्राह्मण केवल पूजा पाठ करते हैं। इनमें भी आपस में विवाह नहीं होते। हां, खाने-पीने की छूतछात नहीं है। पूछने पर ज्ञात हुआ कि बुल्बुल शाह के प्रभाव

से काशमीर के सब असली ब्राह्मण मुसलमान हो गये थे। केवल थोड़े से कारकुन ब्राह्मण बच गये थे। गुलाबसिंह ने भट्ट ब्राह्मणों को बुलाकर बसाया था। यह उनकी सन्तान हैं। यह बात कहाँ तक ठीक है, विश्वास के साथ नहीं कही जाती लेकिन काशमीरियों में यह विचार है।

आपत्ति सिर पर आ गई। लोग क्रिस्टिया राव की ओर अधिकता के साथ झुकने लगे। वह तो इसी ताक में था। सर्वप्रिय बनने का अच्छा अवसर हाथ आगया। ख्याल भी एक तरह की वायु है। जिधर बहा उधर बहा। जिस तरह वायु जोर बांधती है वैसे ही विचार में भी जोर आता है। संयोग की बात कि उस समय दूसरे गाँव में चेचक का रोग फैल गया था। केवल रामपुर उससे बचा था। रामपुर वालों ने अच्छी तरह समझ लिया कि रात के समय की आवाज देवी की थी और इसी विचार को पक्का करने में लग गये।

सब को देवी के दैवी कोप का भय था। लेकिन रामपुर में एक ऐसा आदमी था जो इस ख्याल के बिल्कुल विरुद्ध था। वह समझ गया था—

चर्ख को कब यह सलीका है सितमगारी में।
कोई माशूक है इस परदये जनगारी में॥

लेकिन वह चुप था। न किसी के विश्वास का विरोध और न किसी के ख्याल में बाधा। यदि वह किसी को समझाता बुझाता भी तो वहां उसकी सुनने वाला कौन था! जनसाधारण अन्ध विश्वासी होते हैं। वह कब किसी की मानते हैं। ख्याल का भूत जब सिर पर सवार होता है तो फिर मनुष्य का तन मन उसी का हो जाता है। लेकिन उसे एक लाभ हुआ। वह चौकन्ना रहने लगा। लोगों के चाल चलन रंग-ढंग पर रात दिन दृष्टि रखने की बड़ी आवश्यकता

प्रतीत हुई।

चंडाल चौकड़ी ने वैदिक ब्राह्मणों द्वारा घोषणा कराई कि देवी की पूजा अपने आप हर एक व्यक्ति जब चाहे करे लेकिन इकट्ठे होकर पूर्णमासी का दिन गांव के लोगों को पूजा का दिन नियत किया गया है। और उसमें सब स्त्री पुरुष बाल बच्चों सहित शामिल हों। इससे सब सहमत थे।

——:o:——

बीसवाँ अध्याय

लड़की गुम

विचार आंधी है। जिधर रुख किया, उसी ओर लोगों की आंखों में धूल डालता हुआ उनकी शारीरिक और मानसिक दशा को बदल गया। विचार मेह है। जब मूसलाधार बरसने लगता है सब उससे भीग जाते हैं। विचार बाढ़ है जिधर से चला उधर स्थिति में परिवर्तन पैदा करता हुआ अपना काम कर गया। दुनियां में हर जगह विचार का राज है। विचारवान चाहे जिस योग्यता और इज्जत का हो, यदि उसमें प्रबल विचार शक्ति है तो अपने विचार से जो चाहे कर लेता है। बुद्धिमान मनुष्य, दार्शनिक, धर्मवादी और समझदार हुकूमत को उसका लोहा मानना पड़ता है।

रामपुर में पोचे अम्मां की धूम मच गई। मन्दिर में हर समय रौनक रहने लगी। पशु अधिक संख्या में कटने लगे। पूजा पाठ और भेंट चढ़ावे की विचित्र दशा थी। पुजारियों की चांदी थी। गवर्नमेंट टैक्स लगाती है। लोग देने में हिचकते हैं। यहाँ क्या होता है! बिना मांगे हजारों की रकम खनाखन मन्दिर में बरसती है। रुपया कमाने

का उपाय केवल पूजारियों की सूझ है। केवल जनसाधारण के धार्मिक भाव को तनिक भड़का दिया और अब खुदा दे, बन्दा ले। क्या यह बादशाही नहीं है ? बल्कि उससे कहीं बढ़कर है, यदि साथ ही साथ इन विश्वासियों की रक्षा का उचित प्रबन्ध दृष्टि में रहता। जो धर्म की शानदार हालत देखना चाहे, वह जरा मद्रास की ट्रावनकोर रियासत में चला जाय। वहां पुजारियों के जोर का दृश्य स्वयं दिखाई पड़ जायगा। मन्दिर में भोजन बनता है। अगणित ब्राह्मण खाते-पीते रहते हैं। राजा को दीवान कहा जाता है और मन्दिर का देवता असली राजा समझा जाता है। वहाँ किसी ब्राह्मण के घर रोटी नहीं बनती। सबका इकट्ठा भोजनालय मन्दिर ही समझा जाता है।

पोच अम्मां का मन्दिर बहुत छोटा था। एक समय में कठिनाई से दो आदमी भीतर जा सकते थे। पूजा करने वाले अनगिनत थे। धक्कम धक्का भीड़ भड़क्का ! कन्धे से कन्धा रिगड़ता था। कितने गिरे. घायल हुये लेकिन देवी के दर्शन का शौक चित्त से कम नहीं होता था। वही मन्दिर था जिसमें पहिले कोई आता नहीं था। द्वार पर ताला लगा रहता था। अब पोच अम्मां के भाग्य ने पलटा खाया या पोच अम्मां के नाम पर रुपया बटोरने वालों का भाग्य खुला। जो है उसे पोच अम्मां की मूर्त्ति के दर्शन की धुन है।

ऐसी भीड़ भाड़ है यदि स्त्री पुरुष से और पुरुष स्त्री से, बच्चा मां से और माँ बच्चे से अलग हो जाये तो कोई अचम्भे की बात नहीं। दिन भर इसी का रोना रहता था। शाम को खोये हुये लोग मिल रहते थे। लेकिन शिकायत हो ही गई।

शाम को मन्दिर का पट बन्द हो जाता था। सब अपने घरों को चले जाते थे।

मेले के तीसरे दिन ९ बजे रात को वेंकटेश्वर राव क्रिस्टिया राव के घर पहुँचा। पुजारी ब्राह्मण बैठे हुये थे। चंडाल चौकड़ी के दो

एक मेम्बर चढ़ावे की रकम समेट रहे थे। हिसाब किताब केवल नाम मात्र था। वैदिक ब्राह्मणों को उलटी सुलटी सुनाकर नित्यप्रति रात के बारह बजे अन्दर उनको आमदनी का उचित भाग दे दिया जाता था और वह प्रसन्न होकर चले जाया करते थे। जो मिला वही सही ! यह भी न मिलता तो वह क्या कर लेते ! लेकिन नहीं, उनका मुँह उचित रूप से बन्दकर दिया जाता था। बचा हुआ सब रुपया यारों की मुठ्ठी में जाता था। असली पुजारी तो यह पांच मित्र ही थे। वैदिक ब्राह्मण इनके नायब थे।

वेंकटेश्वर राव ने आते ही शोर मचाया—"मेरी लड़की खोगई। उसका कहीं पता नहीं है।"

क्रिस्टिया राव ने शोक प्रगट किया। उसकी खोज के लिये आदमी छांटने को था कि वेंकटेश्वर राव ने शोर मचाया कि क्रिस्टिया तूने मेरी लड़की को भगा दिया है। बतादे। उसे तुरन्त मँगा वरना मैं अपनी जान दूँगा और तेरी जान लूँगा।

क्रिस्टिया राव—"मामा जो ! होश की दवा खाओ। मुझे तुम्हारी लड़की भगाने से लाभ ?"

वेंकटेश्वर राव—"लाभ तो था। तू बहुत दिनों से उसकी फिक्र में लगा हुआ था। मुझे हर बात का पता है। या तो तू अभी उसे हाजिर कर वरना मैं जमीन व आसमान को एक किये देता हूँ।"

क्रिस्टिया राव—"आपका ख्याल गलत है। यदि मैं चाहता तो मैंने तुम्हारी लड़की पर काबू कर लिया होता। उस पर मेरा अधिकार है। लेकिन मैं किसी और ही फिक्र में हूँ। इधर से मेरा ख्याल हटा हुआ है।"

वेंकटेश्वर राव—"मुझे तेरी धुन मालुम है। वह केवल दिखावटी है। तू ऐसा न करेगा न कर सकता है। न तुझमें जुर्रत है। जाति का भय ऐसे अपराधी के गले की छुरी है। मेरी लड़की को तूने गुप्त कर दिया है। इसी बहाने से तू उसके साथ विवाह करने वालाहै।"

क्रिस्टिया राव पते-पते की बात सुनकर थोड़ी देर चुप रहा। फिर जब्त करके कहा—"मामू साहब ! यह समय धैर्य और सहन करने का है। क्रोध करने या अधीर होने से कुछ आपके हाथ न आयेगा। मैं भी व्यर्थ बदनाम हूँगा और आपका भी अपमान होगा।"

वेंकटेश्वर राव—"तू तो जैसा बदनाम है उसका पता सारी दुनियां को है। मेरा अपमान तो होने को था वह हो गया। तूने मुझे मुँह दिखाने के योग्य नहीं रक्खा।"

क्रिस्टिया राव—"इस समय आप अपने आपे में नहीं हैं। तनिक सोच तो देखिये। इस बुरा भला कहने से लाभ क्या होगा !"

वेंकटेश्वर राव—"मैं मरने मारने को तैयार होकर आया हूँ। या तो तू मेरी लड़की को मिला या मैं अपनी जान दूँगा और तेरी जान लूंगा।"

क्रिस्टिया राव—"मैं आपका भांजा हूँ। मेरी मां आपकी बहिन थी। इस तरह तुम्हारी लड़की मेरी बहिन है। तुम्हारी तरह मुझे भी उसकी रक्षा की चिन्ता होगई है। अवसर दीजिये कि मैं उसकी खोज में लगूँ। आप तो व्यर्थ समय नष्ट कर रहे हैं।"

वेंकटेश्वर राव—"बातें न बना। मैं तेरी एक बात सुनने और मानने को तैयार नहीं हूँ। तूने स्वयं मेरी लड़की को छुपा रक्खा है।"

क्रिस्टिया राव—"मकान की तलाशी लेलो।"

वेंकटेश्वर राव—"बहुत अच्छा ! अपना घर दिखाओ।"

क्रिस्टिया राव और उसके साथियों ने कुल मकान की तलाशी ली। लड़की नहीं निकली। संयोग की बात एक कमरे के अन्दर उसे जमीन में जगह खाली होने का सन्देह हुआ। पांव जमीन पर मारा। उसका सन्देह पक्का निकला। कहने लगा—"यहां तहखाना मालुम होता है मैं उसे भी देखना चाहता हूं।"

क्रिस्टिया राव ने चाबी देदी। उसे तहखाना खोलने की युक्ति बतादी। चाबी के लगने की देर थी, बारीक लोहे का ढका हुआ

तख्ता किनारे पर था, उछला और तहखाना दिखाई पड़ गया। वेंकटेश्वर राव को अकेले उतरने में संकोच था। इसलिये सबसे पहिले हाथ में लैम्प लिये हुये क्रिस्टिया राव स्वयं उतरा। उसके पीछे वेंकटेश्वर राव के साथी थे। सबसे पीछे वेंकटेश्वर राव उतरा। लेकिन लड़की का कहीं पता न था। यह सब बाहर आये।

क्रिस्टिया राव ने कहा—"देखा मामू साहब! आप व्यर्थ मुझे दोष दे रहे हैं। क्या मैं यों उसे जबरदस्ती आपके यहां से नहीं ला सकता था, जो छुपे चोरी यह काम करता। अब चलिये मैं आपके साथ लड़की को ढूँढूं।"

हाथों में लैम्प लिये हुये कई आदमियों ने गांव के इस कौने से उस कौने तक घरों का चक्कर लगाया। पूछताछ की। किसी से लड़की का पता नहीं मिला। जिसने सुना, शोक प्रगट किया लेकिन इससे होता क्या!

मोतीबाई का मकान देखने से बाकी रह गया था। ढूँढ़ने वाले उसके घर पहुँचे रात अधिक होगई थी। दो ढाई बजे का समय अवश्य हो गया होगा। दरवाजे पर आवाज दी। आवाज सुनते ही उठी। अचम्भा हुआ। पहिले तो उसे दरवाजा खोलने में सोच विचार हुआ। लेकिन जब उसने बहुत से लोगों की आवाज सुनी और रोशनी की झलक देखी, मन में कुछ संतुष्टि हो गई। दीपक जलाया। निर्भय होकर द्वार खोला। यह सब क्रिस्टिया राव सहित मकान में घुसे। इस भीड़ में उसका दैवी देवता भी दिखाई दिया। दोनों की आंखें मिलीं। आँखों ने बिना बोले बातें करली। अब उसको पूरी संतुष्टि हो गई। क्योंकि यह उससे वायदे के अनुसार नित्यप्रति मिलता और बातचीत करता रहा था।

मोतीबाई ने क्रिस्टिया राव से पूछा—"कुसमय पर मेरे घर में इतने आदमियों के आने का कारण क्या है?"

क्रिस्टिया राव ने असल हाल सुनाया। उसकी बातों से घृणा

हुई यद्यपि प्रगट नहीं की और दर्द भरे शब्दों में वेंकटेश्वर राव बोली—"पिताजी ! आपको मेरी ओर से व्यर्थ सन्देह हुआ। आपको सोचना चाहिये था कि मैं आपकी लड़की को क्यों छुपाने लगी थी। आप शौक से मेरे घर की तलाशी ले लीजिये।"

मकान छोटा था। सबने इधर उधर देखभाल की। वहां कौन था जो उन्हें मिलता। अन्त में यह लोग निराश होकर घरों को लौट आये। वेंकटेश्वर राव के सिर पर दुख का पहाड़ तो पहिले ही से गिर चुका था अब वह उससे बिल्कुल दब गया। लड़की नहीं मिली।

इक्कीसवाँ अध्याय

अन्तिम निर्णय

दुनियां की दशा विचित्र तरह की है। किसी के घर एक ही समय में विवाह है किसी के यहाँ शोक है। कोई रोता है और कोई हँसता है। एक को दूसरे की परवाह नहीं होती।

दुनियां की बुद्धि ठीक नहीं होती। घटनाओं के भूल जाने और भुला देने के सब आदी हैं।

हर एक को अपनी पड़ी रहती है। लाख जाहिरदारी दिखाई, असल में न कोई किसी का है और न किसी के काम आता है। न बाप बेटे का है न बेटा बाप का है।

दुर्घटना हो जाती है। फिर आदमी अपने काम में पहिले की तरह व्यस्त हो जाता है। इस दुनियां का क्रम ऐसा ही चलता है।

वेंकटेश्वर राव रो धोकर चुप हो गया लेकिन उसकी दशा पागलों से भी बुरी थी। उसका घर शोकागार बन गया। यह नहीं

मालुम हुआ कि लड़की को कौन कहां ले गया और वह क्या हुई। पुलिस को सूचना दी गई। रोजनामचे में घटना लिखली गई और जाँच का वायदा करके पुलिस भी मौन होगई।

पोच अम्मां की नित्य की पूजा में धीरे-धीरे कमी आ गई यद्यपि बिल्कुल बन्द नहीं हुई क्योंकि पूर्णमासी के दिन सबका इकट्ठा होकर पूजा का ध्यान था।

इस घटना के बाद एक दिन अवसर पाकर क्रिस्टिया राव मोती बाई के घर आया। उसका घर सबसे अलग था। क्रिस्टिया राव को मालुम था कि वह कब अकेली रहती थी। वह जानता था कि कथा के समय के अतिरिक्त वह किसी से मिलती जुलती नहीं थी। वह आया। आवाज दी। अन्दर से आवाज आई। उसने कहा—"मैं हूँ क्रिस्टिया राव ! तुमसे कुछ सुनना है।"

दिन दहाड़े का समय था। उसने बिना सोच विचार के द्वार खोल दिया। यह अन्दर आया। द्वार बन्द नहीं किया गया। दोनों चौक में बैठे।

मोतीबाई ने पूछा—"कहो क्या कहते हो ?"

क्रिस्टिया राव ने उत्तर दिया—"वही पहिली बात है। उसके अतिरिक्त मैं और क्या कहूँ ? स्वार्थी को अपने ही स्वार्थ की पड़ी रहती है। जब कहेगा अपनी कहेगा और अपनी ही सुनेगा।"

मोतीबाई—"क्या अब भी तुम नहीं जान सके कि मेरा विचार क्या है।"

क्रिस्टिया राव—"पतंगे को दीपक का प्रकाश छोड़कर कहीं चैन नहीं मिलता। भौंरे को सुगन्ध से स्वाभाविक आसक्ति है। वह जाये भी तो कहां जाय !"

मोतीबाई—"यह दोनों मृत्यु के रास्ते हैं।"

क्रिस्टिया राव—"जब तक आसा तब तक बासा।"

मोतीबाई—"फिर तुम चाहते क्या हो ?"

क्रिस्टिया राव—"बार-बार मैं अपना विचार प्रगट कर चुका हूं। मैं तुम्हें अपना बनाना चाहता हूँ और तुम मुझे अपना बनाओ।"

मोतीबाई—"तुम मेरी नीयत जान गये। फिर भी पीछे पड़े रहते हो।"

क्रिस्टिया राव—"मैं तो हाथ धोकर तुम्हारे पीछे पड़ा हूँ।"

मोतीबाई—"मैं आसान और तर ग्रास नहीं हूँ जो तुम मुझे अपने मुँह में रख सको।"

क्रिस्टिया राव—"इसका पता बाद को होगा।"

मोतीबाई—"आज तो तुम बड़ी निडरता से बात कर रहे हो। मुझे किस हैसियत से अपने पास रखना चाहते हो?"

क्रिस्टिया राव—"जैसे स्त्री पुरुष के साथ रहती है।"

मोतीबाई—"क्या मेरे साथ विवाह करोगे?"

क्रिस्टिया राव—"हिन्दू धर्म विधवा के साथ विवाह करने की आज्ञा नहीं देता वरना मुझे इससे इन्कार न होता।"

मोतीबाई—"फिर?"

क्रिस्टिया राव—'तेलंगी ब्राह्मणों को घर में डाली हुई (मदखूला) स्त्री रखने की आज्ञा है। हमारी जाति इसमें कोई आपत्ति नहीं करती।"

मोतीबाई—"इन शब्दों से मेरा अपमान होता है।"

क्रिस्टिया राव—"अपमान अन्त में मान और प्रेम के रूप में बदल जायगा।"

मोतीबाई—"मैं सन्यासिनी और ब्रह्मचारी हूँ। हिन्दू धर्म आज्ञा नहीं देता कि ऐसी स्त्री किसी के घर में आकर रहे।"

क्रिस्टिया राव—"हिन्दू धर्म पाखंड है। गुड़ खाये और गुलगुलों से परहेज करे।"

मोतीबाई—"तब तुमको अपने धर्म का पास नहीं है।"

क्रिस्टिया राव—"धर्म की आड़ न लो। ब्राह्मणों की हैसियत

हिन्दुओं में विशेष प्रकार की है। वह जो चाहे करे, वह जो चाहे कहे, ब्रह्म वाक्य जानर्दनम्।"

मोतीबाई—"ब्राह्मण कर्म धर्म का साक्षात् रूप होता है। यह तुम क्या कहते हो!"

क्रिस्टिया राव—"यह सब कहने सुनने की बातें हैं।"

मोतीबाई—"यदि ब्राह्मण कुमार्ग पर चले तो फिर हिन्दुओं की क्या दशा होगी! क्या यह खेदजनक नहीं है?"

क्रिस्टिया राव—"आवश्यकता से समय हर बात उचित है।"

मोतीबाई—"ऐसा न करो। तुम बदनाम हो जाओगे और मैं तो दीन दुनियां दोनों से गई बीती समझी जाऊँगी।"

किस्टिया राव—"इसकी तनिक भी चिन्ता न करो। पहिले पहल लोग बुरा भला कहते हैं। फिर यह साधारण बात हो जाती है और आदर मान में अन्तर नहीं आता।"

मोतीबाई—"मेरा यह ख्याल नहीं है।"

क्रिस्टिया राव—"तुम्हारा यह ख्याल नहीं है न सही। मेरा तो ख्याल है। तुमको मेरे ख्याल के आधीन रहना पड़ेगा।"

मोतीबाई—"मैं स्वाभाविक स्वतन्त्र वृति वाली पैदा हुई हूँ। मुझे आधीन रहने की आदत नहीं है।"

क्रिस्टिया राव—"स्वभाव बदलने से बदल जाता है। स्वभाव का बदलना कौनसी कठिन बात है। मैं अपने प्रेम और व्यवहार से तुम्हारा स्वभाव सुगमता से बदल दूंगा।"

मोतीबाई—"मैं यहां इस तरह रहना नहीं चाहती। मैं यहां से चली जाऊँगी।"

क्रिस्टिया राव—'तुम यहां से अब नहीं जा सकती हो। तुमको पता नहीं है कि मैं इस जगह का बादशाह हूँ।"

मोतीबाई—'यह तो मैं जानती हूँ कि तुम रामपुर के पटेल पटवारी हो। बादशाह मैं तुमको नहीं समझती और न तुम बादशाह हो।"

क्रिस्टिया राव—"फिर जरा बाहर निकल के देखो तो सही धरी पकड़ी बँधी आओगी। कोई दैवी और सांसारिक शक्ति तुम्हारी सहायक न होगी और न तुम्हारी सहायता करने का किसी को ख्याल होगा। साहस करना तो दूर रहा।"

मोतीबाई—"अफसोस ! बुरे आदमी से पाला पड़ा है।"

क्रिस्टिया राव—"औरों के लिये चाहे मैं बुरा आदमी हूं। तुम्हारे लिये भला रहूँगा। फिर तुम मुझे बुरा न समझोगी।"

मोतीबाई—"ईश्वर के नाम पर मुझ पर दया करो। मुझे न सताओ। मैं बेबस अबला और आश्रित स्त्री हूं।"

क्रिस्टिया राव—"ईश्वर का इन बातों से क्या सम्बन्ध है ! दया तो मैं करूँगा लेकिन मेरी हो जाओ। और मेरे घर में रानी की हैसियत में रहना स्वीकार करो।"

मोतीबाई—'देखो क्रिस्टिया राव ! स्त्री की बेइज्जती न करो। बाली ने यह रास्ता लिया, राम के तीर से मारा गया। रावण ने सीता से जबरदस्ती करनी चाही, परिवार सहित नष्ट हुआ। दुर्योधन ने द्रोपदी का अपमान करना चाहा, कृष्ण ने महाभारत में उसे एक सौ एक भाइयों सहित नष्ट कर दिया। यह न समझो कि राम और कृष्ण मर गये। वह प्रकृति की जीवित शक्तियां हैं। वह मेरा बदला तुमसे लेंगे।"

क्रिस्टिया राव—"मोतीबाई तुम समझदार हो। इन दन्त कथाओं पर तुम कैसे विश्वास करती हो। राम तो कब के गुप्तार घाट में गुप्त हो गये और कृष्ण भील के तीर से मारे गये। वह अब कहां हैं जो तुम्हारी सहायता करेंगे।"

मोतीबाई—"तुम और तो किसी स्त्री से विवाह न करोगे ?"

क्रिस्टिया राव—"मैं इसकी प्रतिज्ञा नहीं करता। वंश चलाने के लिये मैं ऐसा करूँगा लेकिन तुम मेरी रानी बनी रहोगी। इसकी मैं प्रतिज्ञा करता हूँ।"

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

मोतीबाई—"यदि मेरी सन्तान हुई तो क्या तुम्हारी जायदाद का उत्तराधिकार उसे मिलेगा ?"

क्रिस्टिया राव—"जायदाद का उत्तराधिकार तो जायज सन्तान को मिलता है लेकिन तुम्हारी सन्तान भूखों न मरेगी। मैं उसके पालन पोषण का उचित प्रबन्ध कर दूँगा।"

मोतीबाई—"यदि मैं इंकार करूँ तो ?"

क्रिस्टिया राव—"फिर मैं कठोरता से काम लूँगा। प्रकृति पुरुष ही के भोग के लिये है। प्रकृति चाहती रहती है कि कोई पुरुष उसे भोगे। तुम अनोखे ढंग की स्त्री हो। पुरुष का तो धर्म यही है कि प्रकृति को अपने नीचे रक्खे।"

मोतीबाई—"दया करो। मुझे अपनी दशा में पड़ी रहने दो।"

क्रिस्टिया राव—"यह असम्भव है।"

मोतीबाई—"मैं प्राण दे दूँगी और तुम्हारे हाथ न आऊँगी।"

क्रिस्टिया राव—"यह सब झूँठी बातें हैं।"

मोतीबाई—'यह न समझो कि मैं विना सोचे समझे यहां अकेली पड़ी हूँ। मैं हर समय सशस्त्र रहती हूँ। किसी ने मुझे हाथ लगाया तो मैं उसी समय भुट्टे की तरह उसका सिर उड़ा दूँगी।"

क्रिस्टिया राव—"मुझे इसका पता है। तुम्हारी कमर से कटार बँधी रहती है। मैं इसका प्रबन्ध करना जानता हूं।"

मोतीबाई—"बहुत अच्छा ! तो अब यहां से चले जाओ। मुझसे ऐसी दूषित बातें न करो।"

क्रिस्टिया राव उठा और चुपके से चला गया।

बाईसवां अध्याय

अत्याचार की पराकाष्टा

पूर्णमासी को साधारण बलिदान और पूजा का दिन आ गया। केवल एक रात बीच में थी।

मोतीबाई द्वार बन्द करके सो रही थी। कोई आदमी सीढ़ी लगाकर धीरे-धीरे मकान पर चढ़ा और नीचे उतर कर चौक में आया। चुपके-चुपके मकान का दरवाजा खोल दिया। कई आदमी आ गये। उसकी नींद खुल गई। पूछा—"कौन ?" उत्तर दिया गया तुम्हारा प्रेमी।" यह चुप हो गई। वह इस आक्रमण के लिये तैयार थी। उसे पहिले ही से हर बात की खबर थी क्योंकि क्रिस्टिया राव की हरकतों और बातचीत तक की हर समय देखभाल रहती थी। वह बेसुध था कि छाया की तरह उसका पीछा किया जा रहा है। मोतीबाई इन पीछा करने वालों की भेदी थी। यदि यह न होता तो वह डर जाती, शोर मचाती, लेकिन वहां सुनने वाला और सहायक पड़ोसियों में कोई नहीं था। चुप रहने में ही खैरियत थी। लेकिन पूरी आशा थी क्रिस्टिया राव का पीछा करने वाले उसकी देखभाल में चुस्त व चालाक हैं। इस कारण उसे निश्चय था।

वह खाट पर उठकर बैठ गई। क्रिस्टिया राव सामने आया। उसने आते ही आज्ञा दी—"कमर से कटार निकालकर फेंकदो।" इसने उत्तर दिया—वह मेरे पास नहीं है। मैंने तुमको केवल धमकी दी थी।"

क्रिस्टिया राव ने कहा मालुम हो गया कि अब तुम समझ गई हो और नेक राह पर आगई हो। सीधी उँगली से घी नहीं निकलता, तब सख्ती करनी पड़ती है। यदि पहिले ही से रजामन्द होती तो इसकी नौबत नहीं आती।"

मोतीबाई—"मैं तो नेक राह पर थी। तुमने ही टेड़ा रास्ता पकड़ा था।"

क्रिस्टिया राव—"खैर ! जो हुआ अच्छा हुआ। सुबह का भूला हुआ यदि शाम को आ जाये तो भी इतनी हानि नहीं होती।"

मोतीबाई—"मैं सुबह को भूली और न शाम को। भूले तो तुम थे और अब भी अपने होश में नहीं हो।"

क्रिस्टिया राव—"क्या अब भी तुम्हारी आंख नहीं खुली ?"

मोतीबाई—"मेरी आँख खुली हुई हैं। मैं होश में हूं। तुम होश में नहीं हो। अन्धे बन गये हो।"

क्रिस्टिया राव ने चंडाल चौकड़ी को कहा—"यह यों न मानेगी। इसके मुँह को बन्द करके उठा ले चलो और तहखाने में ले चलकर दो चार दिन अन्न जल बिना रक्खो। तब यह राह पर आयेगी।"

वह इसकी ओर झुके। इसने जोर से ताली बजाई। सैकड़ों आदमी जो छुपे हुये बाहर ताक में लग रहे थे झपटे और क्षण भर में सबको पकड़ लिया। उनकी मुश्कें कसलीं और दूसरी आज्ञा का इन्तजार करने लगे। इनमें वह बूढ़ा तेलंगी ब्राह्मण भी था जिसका नाम वेंकटेश्वर राव था और जो महिनों से क्रिस्टिया राव के विरुद्ध छुपे-छुपे सहायता कर रहा था। संयोग से मोतीबाई इसके हाथ लग गई। वह काम की स्त्री निकली और अब बदला लेने का अवसर हाथ आ गया।"

पाँचों को इसकी जानकारी नहीं थी और न वह इसके लिये तैयार थे। आश्चर्य का रूप बन गये। स्वय मौनता की मौहर जुबान पर लग गई। वह क्या जानते थे कि उनकी गति विधियों पर ईश्वर की आंख रहती है।

मोतीबाई ने क्रिस्टिया राव से कहा—"कहो अब क्या कहते हो ? इसके मुँह से आवाज नहीं निकली।"

क्रमशः

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

दयाल फकीर कृत पुस्तकों की सूची

मानव धर्म प्रकाश हिन्दी	-७५	नाम दान	१-००
आवागवन उर्फ } हिन्दी	१-००	सार का सार भाग १,२	२.७५
जीवन रहस्य } उर्दू	-७५	मानवता युग धर्म	.५०
मनुष्य बनो हिन्दी	-७५	निष्कलंक अवतार हिन्दी	.५०
जगत कल्याण हिन्दी	-७५	मानव कल्याण भाग १,२,३,४,५	५ ००
जगत उभार	१-००	गरुण पुराण रहस्य	१.००
आकाशीय रचना	.५०	अद्भुत मोती	.७५
फ़कीर वचनामृत	.४०	आजादी की कुंजी	.४०
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेट		गुरु वन्दना	.६५
भाग १—२	२-२५	कबीरसार शब्द व्याख्या	१.००
कर्मभोग या मौज भाग १ ,२,	१-७५	शिव फकीर पत्रावली	१.२५
५० वर्षीय फकीर अनुभव	.५०	हृदय उद्गार	१.००
संत सतगुरु वक्त	१-५०	अगम वाणी भाग १,२,३ प्रति	१.००
उन्नति मार्ग	-२५	सुरत शब्द योग	१.००
विश्व धर्म भाग १ व २	१-७५	सत सनातन धर्म अथवा—	
गुरु महिमा	१-००	सत मानव धर्म	३.००
[illegible]ायव पुरुष	१-००	निर्वाण से परे	१.००
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१-२५	रचना का भेद	.७५
आदि अन्त	१-२५	बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
सारतत्व सचाई और शान्ति	१.००	ईश्वर दर्शन	१)
अगम विकाश	१-००	मेरी धार्मिक खोज	१.२५
सतज्ञान दाता भाग १, २	२·००	अपार के परे	१·२५
ज्ञान योग	१·००	बारहमासा की व्याख्या	१·००

महर्षि शिवव्रतलाल कृत पुस्तकों की सूची

महर्षि शिव की जीवनी उर्दू	५.००	मूर्ति पूजा रहस्य	०.२५
याल योग	,, २.५०	सत्य सनातन आर्य धर्म	१.२५
वेक कल्पद्रुम	१.५०	रहिमन नीति दोहावली	.५०
फलता के साधन हिन्दी	.५०	योग आसन	.२५
तमुखी	.५०	सप्त ऋषि वृतान्त	.७५
र्ं सन्देश	.५०	राजस्थान की ललित ललनायें	१.००
त रहस्य	१.००	सत्संग के ८ वचन	०.७५
वृत्तान्त	.७५	पांच नाम की व्याख्या	१.२५
जीवन सुधार	,७५	हितोपदेश	.५०

Registered No. L. 15

महर्षि शिवव्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकों की सूची

सम्पूर्ण महारामायण सजिल्द	६)	ओ३म् नाविल	२.२५
श्रीमद्भगवद्गीता भाग १–२	२.५०	झलकदार मोती	२.००
नानक योग ३ भाग सजिल्द	४)	गिरहदार मोती	१.
राधास्व... योग ६ भाग सजिल्द	५)	शाहवार मोती	१.
कबीर योग प्रथम भाग	२)	रंगदार मोती	२.
" " द्वतीय "	१.७५	दलदार मोती	२.
" " तृतीय "	१.५०	कजदार मोती	२.
शरणागति योग	.७५	शिवजी की अद्भुत कहानी	१.
उपासना योग	.७५	चमकदार मोती	२.
कर्म योग	.७५	आदर्श भारतीय नारियाँ	१.
आनन्द योग प्रकाश	२.५०	फकीर भजनावली	१.
Light on Anand yog	३)	शब्द गुन्जार भाग १,२,३	३.
आत्मिक प्रायमर		शब्दों का गुटका	०.
कबीर आद्यज्ञान प्रकाश	२.००	नन्दू भाई की साखी	१.
पंथ सन्देश	३.००	कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१.
कथा कल्पद्रुम	१.००	कबीर शब्दावली	.७
सप्ताह विचार	१.५०	नैयर आजम प्र०भा०	१.
शाही पति परायण	१.००	सत कबीर की साखी	१.
शाही भूत	१.००	पिंगल साखी	
शाही डाकू	१.७५	स्वास्थ्य और भोजन	१.
शाही लकड़हारा	२.६०	रा०स्वा०मतप्रकाश वचनसार	१.
शाही जादूगरनी	२.५०	जीवन सुधार	१.
शाही भिखारी	२.६०	अनमोल उपदेश	१.
आबदार मोती	१.७५	विचार दर्पण	१.
ताबदार मोती	१.५०	विचारशक्ति अथवा मनोविज्ञान	१.
आत्मिक उत्कर्ष	१.००	विचारांजलि	१.५

शिव साहित्य प्रकाशन मण्डल कार्यालय—'शिव'
पोस्ट दयालनगर, अलीगढ़ उ०प्र०)लेखराज नगर, अलीगढ़(उ०प्र०)

सतीशचन्द्र मीतल द्वारा दयाल प्रिन्टिंग प्रेस, लेखराज नगर, अलीगढ़ मे मुद्रित
राघव प्रेस के लिए